

पटना उच्च न्यायालय के क्षेत्राधिकार में

विविध अपील संख्या 35/2016

=====

नीरज कुमार सिंह, पुत्र- स्वर्गीय सचिदानंद सिंह, निवासी मोहल्ला- लाल बाग, पी.एस. तिलकामांझी, कोतवाली, जिला- भागलपुर, स्थायी निवासी-ग्राम-डोगाछी, तरार, थाना- संहौला, जिला-भागलपुर, वर्तमान में एच.जी.ए. क्लेम विभाग, एल.आई.सी. ऑफ इंडिया, भागलपुर, डिवीजन कार्यालय, जीरो माइल, थाना-जीरो माइल, जिला भागलपुर में पदस्थापित।

-----अपीलकर्ता

बनाम

टेसु कुमारी, पत्नी-नीरज कुमार सिंह, पुत्री-सीताराम ठाकुर, निवासी- मोहल्ला लाल बाग, शोभा देवी नर्स के घर, थाना तिलकामांझी, कोतवाली, जिला भागलपुर, वर्तमान में एच.जी.ए. क्लेम विभाग, एल.आई.सी. ऑफ इंडिया, भागलपुर, डिवीजन कार्यालय, जीरो माइल, थाना-जीरो माइल, जिला- भागलपुर में पदस्थापित।

----- प्रतिवादी

=====

उपस्थिति:

अपीलकर्ता के लिए : वरिष्ठ अधिवक्ता श्री अभिनाश कुमार सिंह,

अधिवक्ता प्रतिवादी के लिए : वरिष्ठ अधिवक्ता श्री गणपति त्रिवेदी,
 वरिष्ठ अधिवक्ता श्री संजीव कुमार मिश्रा,
 वरिष्ठ अधिवक्ता श्री ऋतिक शाह,
 वरिष्ठ अधिवक्ता श्री मदन मोहन,
 वरिष्ठ अधिवक्ता श्रीमती पल्लवी पांडे,

=====

विचाराधीन मुद्दा : क्या परिवार न्यायालय के विद्वान् प्रधान न्यायाधीश द्वारा पारित विवाहिक मामले में निर्णय में कोई दोष है?

क्या उत्तरदाता को वैवाहिक अधिकारों की पुनर्स्थापना के लिए राहत प्राप्त करने का अधिकार है ? क्या परिवार न्यायालय के विद्वान् प्रधान न्यायाधीश के निर्णय में कोई दोष है?

निर्णय दिया गया; यह मुद्दा अपीलकर्ता और प्रतिवादी के पति और पत्नी के रूप में वैवाहिक स्थिति के विवाद के कारण लटका हुआ था। एक बार जब प्रतिवादी यह साबित करने में सक्षम हो जाती है कि अपीलकर्ता उसका पति है, तो अपीलकर्ता के मौखिक साक्ष्य से परित्याग साबित होता है। यदि अपीलकर्ता ने प्रतिवादी को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करने से इनकार कर दिया है, तो स्वाभाविक रूप से, वैवाहिक जीवन की पुनर्स्थापना का कोई प्रश्न नहीं था क्योंकि अपीलकर्ता का पूरा विरोध केवल इस बिंदु पर है कि प्रतिवादी उसकी पत्नी नहीं है।

स्पष्ट रूप से, अपीलकर्ता ने उत्तरदाता को बिना किसी उचित कारण के छोड़ दिया है और दोनों पक्षों के साक्ष्य की चर्चा के प्रकाश में, यह निर्णय लिया गया कि उत्तरदाता को वैवाहिक अधिकारों की पुनर्स्थापना के लिए राहत प्राप्त करने का अधिकार है और परिवार न्यायालय के माननीय प्रधान न्यायाधीश के निर्णय में कोई दोष नहीं है।

क्या यह कहा जा सकता है कि प्रतिवादी अपीलकर्ता की कानूनी रूप से विवाहित पत्नी है और उनका विवाह 09 नवंबर, 2003 को हुआ था ?

निर्णय दिया गया; प्रतिवादी की ओर से परीक्षण किए गए गवाहों ने स्पष्ट रूप से कहा है कि हिंदू विवाह के सभी अनुष्ठान और रीतियाँ पूरी की गईं; सिंदूर लगाया गया और सप्तपदी' भी हुई। इसलिए, यह नहीं कहा जा सकता कि विवाह आवश्यकताओं से रहित था जो हिंदू विवाह अधिनियम की धारा 7 के तहत निर्धारित अनुष्ठानों और रीतियों के अनुसार किया गया था और स्पष्ट रूप से विवाह हिंदू विवाह अधिनियम की धारा 5 के तहत प्रतिबंधित नहीं था। इसके अलावा, प्रतिवादी का मौखिक साक्ष्य प्रतिवादी और अपीलकर्ता के विवाह के मामले में अडिग और असंदिग्ध है। प्रतिवादी के गवाह विभिन्न रंग के हैं और सभी को इच्छुक गवाह नहीं कहा जा सकता। जो भी गवाह सामने आए, उन्होंने 09.11.2003 को अपीलकर्ता के साथ प्रतिवादी के विवाह के मामले का समर्थन किया। इसके अलावा, अपीलकर्ता प्रतिवादी के गवाहों के बयान की सत्यता को चुनौती देने में असमर्थ रहा है। दूसरी ओर, अपीलकर्ता के सभी गवाह रुचि रखने वाले गवाह हैं। हमेशा यह नहीं होता कि रुचि रखने वाले गवाहों पर भरोसा नहीं किया जा सकता, लेकिन वर्तमान मामले में उनके साक्ष्य को कुछ सावधानी के साथ विचार करना चाहिए क्योंकि वे अपीलकर्ता के भाई, मां और पत्नी होने के नाते अत्यधिक पक्षपाती गवाह हैं। उनका इनकार समान है। अध्ययन के बाद यह निर्णय लिया गया कि अपीलकर्ता और प्रतिवादी के बीच 09.11.2003 को हिंदू रीति-रिवाजों के अनुसार विवाह संपन्न हुआ।

माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने मामले में रंजनाथ परमेश्वर पंडितराव माली और अन्य बनाम एकनाथ गजानन कुलकर्णी और अन्य, (1996) 7 SCC 681 में यह निर्णय दिया है कि यदि संबंध का लगातार प्रमाण है, तो यह कानूनी अनुमान उत्पन्न होता है कि वे पति और पत्नी के रूप में एक साथ रह रहे थे। इसी तरह का प्रभाव माननीय सर्वोच्च न्यायालय की टिप्पणी है मामले में शिराम्बाई पत्नी पुंडलिक. भव और अन्य बनाम कसान, रिकॉर्ड अधिकारी फॉर ओ.आई.सी. रिकॉर्ड्स, सेना कोर अभिलेख, गया, बिहार राज्य और अन्य, 2023 एस सी सी ऑनलाइन एस सी 1026 में अनुच्छेद संख्या 14 से 23 में। [अनुच्छेद-30]

माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने मामले इलावरासन बनाम पुलिस अधीक्षक और अन्य, जो 2023 एस सी सी ऑन लाइन एस सी 1120 में रिपोर्ट किया गया, में विवाह की खुली घोषणा के रास्ते में आने वाले खींचाव, दबाव और विभिन्न प्रकार की मजबूरियों के मुद्दे पर अवलोकन किया है। [पैराग्राफ-29]

पटना उच्च न्यायालय का न्याय निर्णय

=====

कोरम:

माननीय न्यायमूर्ति श्री पी. बी. भजंत्री

और

माननीय न्यायमूर्ति श्री अरुण कुमार झा

सीएवी निर्णय

(माननीय न्यायमूर्ति श्री अरुण कुमार झा द्वारा)

तिथि: 10-05-2024

वर्तमान विविध अपील परिवार न्यायालय अधिनियम, 1984 की धारा 19(1) के तहत, परिवार न्यायालय, भागलपुर के प्रधान न्यायाधीश द्वारा पारित निर्णय और डिक्री दिनांक 04.11.2015 और 21.11.2015 के खिलाफ दायर की गई है, जो कि वैवाहिक मामला संख्या 81/2009 में पारित की गई थी।

मामले के तथ्यात्मक पहलू:

02. पक्षों के मामले का सारांश यह है कि प्रतिवादी ने हिंदू विवाह अधिनियम, 1955 की धारा 9 के तहत वैवाहिक मामला संख्या 81/2009 दायर किया, जिसमें अपीलकर्ता/विपक्षी पार्टी के खिलाफ वैवाहिक अधिकारों की पुर्नस्थापना की मांग

की गई थी, जिसमें अपीलकर्ता को प्रतिवादी के प्रति अपने वैवाहिक कर्तव्यों का निर्वहन करने का निर्देश दिया गया था। सुविधा के लिए, हम वर्तमान अपील में उपयोग की गई नामावली का उपयोग करेंगे। प्रतिवादी के परिवार न्यायालय में दायर याचिका से प्रतीत होता है कि वह भागलपुर में रह रही थी और एलआईसी के एक शाखा में काम कर रही थी। अपीलकर्ता ने प्रतिवादी के साथ 9 नवंबर, 2003 को हिंदू रीति-रिवाजों के अनुसार भागलपुर में विवाह किया। दोनों अपीलकर्ता और प्रतिवादी एलआईसी में काम करते थे और 2003 में झारखंड के साहेबगंज जिले में एलआईसी कार्यालय में पदस्थापित थे। दोनों भागलपुर में रह रहे थे और वे एक साथ ट्रेन से और मोटरसाइकिल से मासिक यात्रा करते थे। निकट संबंध के कारण उनके बीच विशेष स्नेह उत्पन्न हुआ और यह प्रेम में परिणत हुआ। अपीलकर्ता और प्रतिवादी ने अपने परिवार के सदस्यों के हस्तक्षेप या हस्तक्षेप के बिना विवाह करने का निर्णय लिया क्योंकि वे अलग-अलग जातियों से संबंधित थे और इस प्रकार विवाह प्रतिवादी के निवास पर संपन्न हुआ, जिसमें प्रतिवादी की बहन और बहनोई (दीदी और जीजा जी) सहित निकट संबंधी उपस्थित थे, क्योंकि वह आदमपुर, भागलपुर में किराए के घर में रह रही थी। विवाह पंडित पंकज कुमार झा द्वारा संपन्न हुआ। अपीलकर्ता और प्रतिवादी ने लगभग 2 वर्षों तक शांतिपूर्ण वैवाहिक जीवन व्यतीत किया, लेकिन जब यह तथ्य अपीलकर्ता के माता-पिता के संज्ञान में आया, तो वे क्रोधित हो गए। उन्होंने अपीलकर्ता पर दबाव डालना शुरू कर दिया कि वह एक ही जाति की महिला से विवाह करे और अच्छा दहेज प्राप्त करे। पैसे के प्रलोभन और अपनी मां द्वारा उकसाए जाने पर, अपीलकर्ता ने प्रतिवादी से 10,00,000 रुपये की मांग शुरू कर दी और इस मांग को पूरा न करने पर, अपीलकर्ता ने प्रतिवादी से दूरी

बनाना शुरू कर दिया और बाद में दहेज लेकर दूसरी महिला से विवाह कर लिया। अपीलकर्ता के दूसरे विवाह के बारे में जानने के बाद, प्रतिवादी अपीलकर्ता के पैतृक स्थान पर गई, लेकिन अपीलकर्ता के परिवार के सदस्यों द्वारा प्रतिवादी को गाली दी गई और धमकी दी गई। दहेज की निरंतर मांग के कारण, प्रतिवादी ने अपीलकर्ता और उसकी मां के खिलाफ भा० दं० सं० की धारा 498ए और दहेज निषेध अधिनियम की धारा 3/4 के तहत प्राथमिकी दर्ज कराई। बाद में, अपीलकर्ता और उसके परिवार के सदस्यों के अड़ियल रवैये के कारण कई मुकदमे शुरू हुए। प्रतिवादी ने अपीलकर्ता और उसकी मां के साथ सीधे या अन्य व्यक्तियों के माध्यम से बातचीत जारी रखी, उन्हें अपीलकर्ता के साथ रहने की अनुमति देने के लिए मनाने की कोशिश की। प्रतिवादी ने प्रस्तुत किया कि कारण 05.04.2006 को उत्पन्न हुआ, जब अपीलकर्ता ने अपने दूसरे विवाह के बाद प्रतिवादी के साथ वैवाहिक जीवन जीने से इनकार कर दिया और इसके बाद, प्रतिवादी ने वैवाहिक अधिकारों की पुनर्स्थापना के लिए परिवार न्यायालय में याचिका दायर की। प्रतिवादी ने आगे प्रस्तुत किया कि अपीलकर्ता के साथ प्रतिवादी का विवाह वैध था और उसे वैवाहिक अधिकारों की पुनर्स्थापना का अधिकार है और वह अपीलकर्ता के साथ उसकी पत्नी के रूप में वैवाहिक जीवन जीने के लिए तैयार है। इस प्रकार, प्रतिवादी ने अपीलकर्ता के खिलाफ वैवाहिक अधिकारों की पुनर्स्थापना के लिए डिक्री पारित करने की प्रार्थना की, जिसमें उसे प्रतिवादी के प्रति अपने वैवाहिक कर्तव्यों का निर्वहन करने का निर्देश दिया गया।

03. अपीलकर्ता ने भागलपुर के परिवार न्यायालय के समक्ष अपने लिखित बयान दाखिल करते हुए दावा किया कि याचिका बनाए रखने योग्य नहीं थी।

अपीलकर्ता ने प्रतिवादी के साथ अपने विवाह के दावे को शरारती रूप से झूठा और निराधार बताया। अपीलकर्ता ने प्रस्तुत किया कि प्रतिवादी-टेसु कुमारी वर्ष 2003 में साहेबगंज एलआईसी शाखा में तैनात थी और अपीलकर्ता भी उसी सेवा में समान स्थिति में तैनात था और वे एक ही कार्यालय में काम कर रहे थे और उनके बीच दोस्ताना और आधिकारिक संबंध थे। अपीलकर्ता को प्रतिवादी द्वारा अपीलकर्ता के प्रति भावनाओं के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। प्रतिवादी ने मार्च 2005 में साहेबगंज से भागलपुर के लिए स्वैच्छिक स्थानांतरण प्राप्त किया जबकि अपीलकर्ता अगस्त 2007 तक साहेबगंज में रहा और अगस्त 2007 में भागलपुर स्थानांतरित हो गया। अपीलकर्ता ने 23.11.2005 को बिभा कुमारी से विवाह किया। इसके बाद, प्रतिवादी ने अपीलकर्ता से विवाह करने का अपना इरादा प्रकट किया। प्रतिवादी द्वारा धमकी दिए जाने पर अपीलकर्ता ने *संहा* संख्या 349/2006 दर्ज कराई। प्रतिवादी ने भी *संहा* संख्या 1467/2006 दर्ज कराई जिसमें उसने अपने विवाह का दावा किया लेकिन बिना किसी तिथि, स्थान और तरीके का उल्लेख किए। उसने एक विवाह प्रमाण पत्र भी प्राप्त किया जिसमें मंदिर का नाम नहीं बताया गया जिसने कथित रूप से प्रमाण पत्र जारी किया था। प्रतिवादी ने एलआईसी, भागलपुर के वरिष्ठ मंडल प्रबंधक के समक्ष एक याचिका दी जिसमें उसने उल्लेख किया कि नवंबर 2003 में उन्होंने विवाह किया था और वे पति-पत्नी के रूप में रहने लगे थे लेकिन बिना किसी तिथि के। इसके बाद, प्रतिवादी ने एक आपराधिक मामला दर्ज किया और एफआईआर में उसने किसी भी व्यवस्थित विवाह का उल्लेख नहीं किया जैसा कि उसने बाद में दावा किया और केवल यह कहा कि 9 नवंबर 2003 से वे पति-पत्नी की तरह रह रहे थे जबकि दोनों साहेबगंज में काम कर रहे थे।

उसने कहीं भी उन व्यक्तियों के नाम का खुलासा नहीं किया जिनकी उपस्थिति में विवाह संपन्न हुआ था। अपीलकर्ता को गिरफ्तार किया गया और हिरासत में रखा गया और अपीलकर्ता को इस न्यायालय से जमानत मिली जब यह दस्तावेज रिकॉर्ड पर लाया गया जिसमें दिखाया गया कि प्रतिवादी ने 14.03.2007 तक एलआईसी कार्यालय में खुद को अविवाहित बताया था। अपीलकर्ता ने अपने लिखित बयान में प्रतिवादी के साथ कभी पति-पत्नी के रूप में रहने से इनकार किया और अगर उन्होंने 09.11.2003 को विवाह किया था, तो प्रतिवादी 2005 में स्वैच्छिक स्थानांतरण क्यों प्राप्त करती जब अपीलकर्ता 2005 के बाद भी वहां रहा? अपीलकर्ता ने दोहराया कि अपीलकर्ता और प्रतिवादी के बीच कभी प्रेम संबंध नहीं था और वे सहकर्मी थे जिनके बीच अच्छे संबंध थे और उन्होंने कभी विवाह के बारे में बात नहीं की। इसके अलावा, अपीलकर्ता और प्रतिवादी ने कभी पति-पत्नी के रूप में नहीं रहे। अपीलकर्ता ने प्रतिवादी द्वारा दावा किए गए विवाह से इनकार किया और दावा किया कि यह तथ्य उसे केवल जनवरी 2006 में पता चला जब प्रतिवादी ने अपना सच्चा इरादा प्रकट किया। यहां तक कि दहेज की मांग का आरोप भी पूरी तरह से झूठा और निराधार था। अपीलकर्ता ने अपने लिखित बयान में आगे कहा कि उसकी केवल एक पत्नी है, अर्थात् बिभा कुमारी और कोई अन्य विवाह नहीं है और उसकी पत्नी बिभा कुमारी से उसके दो बच्चे हैं। इस प्रकार, अपीलकर्ता ने कहा कि वैवाहिक अधिकारों की पुनर्स्थापना का कोई सवाल ही नहीं उठता क्योंकि प्रतिवादी अपीलकर्ता की पत्नी नहीं है और इसलिए प्रतिवादी/याचिकाकर्ता की याचिका खारिज किए जाने योग्य है।

04. पक्षों की दलीलों के आधार पर, भागलपुर के परिवार न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश ने निम्नलिखित मुद्दों को निर्धारित किया:

(i) क्या मामला जैसा कि प्रस्तुत किया गया है, बनाए रखने योग्य है?

(ii) क्या याचिकाकर्ता के पास मुकदमे के लिए वैध कारण है?

(iii) क्या याचिकाकर्ता प्रतिवादी की पहली कानूनी रूप से विवाहित पत्नी है जैसा कि दावा किया गया है?

(iv) क्या याचिकाकर्ता वैवाहिक अधिकारों की पुनर्स्थापना के लिए डिक्री पाने की हकदार है जैसा कि प्रार्थना की गई है?

(v) याचिकाकर्ता को और कौन सा या कौन से राहत या राहतें, यदि कोई हो, प्राप्त करने का अधिकार है?

05. अपने मामले के समर्थन में, प्रतिवादी ने परिवार न्यायालय के समक्ष निम्नलिखित मौखिक और दस्तावेजी साक्ष्य प्रस्तुत और परीक्षण किए:

मौखिक साक्ष्य/यों:

PW-1 - महेश प्रसाद सिंह

PW-2 - कैलाश रजक

PW-3 - विकास सिंह

PW-4 - टेसु कुमारी

PW-5 - रोहित कुमार ठाकुर

PW-6 - अवन कुमार सिंह

PW-7 - श्रीमती रेनू कुमारी

दस्तावेजी साक्ष्य/यों:

प्रदर्श-1: पंडित पंकज कुमार झा द्वारा जारी प्रमाण पत्र, जिसमें दिखाया गया है कि उन्होंने 09.11.2003 की रात को आदमपुर, भागलपुर में अपीलकर्ता और प्रतिवादी के बीच विवाह संपन्न किया, लेकिन मूल प्रमाण पत्र में जारी करने की तिथि नहीं है, लेकिन इसमें गवाहों के हस्ताक्षर हैं, जैसे श्री सुधीर कुमार ठाकुर, रोहित कुमार, नीता ठाकुर (दुल्हन के लिए) और महेश सिंह, विकास सिंह और नंद रानी देवी (दूल्हे के लिए)।

प्रदर्श-2: याचिकाकर्ता और विपक्षी पार्टियों की पति-पत्नी के रूप में जोड़ी की तस्वीरें।

प्रदर्श-3: प्रतिवादी द्वारा एलआईसी भागलपुर, शाखा-1 के समक्ष प्रस्तुत याचिका का विवरण, जिसमें उसका पता सी/ओ रविंद्र रजक, आदमपुर, भागलपुर और उसकी जन्म तिथि 01.01.1967 है।

प्रदर्श-4: प्रतिवादी द्वारा एलआईसी भागलपुर, शाखा-1 को प्रस्तुत विवरण, जिसमें उसका पता नीरज कुमार सिंह की पत्नी के रूप में सी/ओ शोभा देवी, नर्स, लाल बाग, तिलकामांझी, भागलपुर 31.03.2010 को दिखाया गया है।

प्रदर्श-5: मुख्य प्रबंधक, एलआईसी कार्यालय, भागलपुर शाखा-1 द्वारा जारी पत्र, जिसमें प्रतिवादी का पता नीरज कुमार सिंह की पत्नी के रूप में सी/ओ श्रीमती शोभा देवी, घर नंबर 64 टेक्नो पॉइंट गली, लाल बाग, तिलकामांझी, भागलपुर दिखाया गया है।

प्रदर्श-6: प्रतिवादी टेसु कुमारी द्वारा एलआईसी भागलपुर, शाखा-1 के मुख्य प्रबंधक को दी गई वैवाहिक स्थिति में परिवर्तन की जानकारी, जिसमें नीरज कुमार सिंह, पुत्र सचिदा नंद सिंह, डोगाछी, तरार पी.एस.-सन्हौला, भागलपुर को उसका पति दिखाया गया है।

प्रदर्श-7: एलआईसी का बयान, जिसमें टेसु कुमारी के नामांकित व्यक्ति के रूप में नीरज कुमार सिंह, उसके कथित पति, को उच्च श्रेणी सहायक के रूप में काम करते हुए दिखाया गया है।

प्रदर्श-8: एलआईसी डिवीजन के अतिथि गृह के पंजीकृत विवरण की सत्य प्रति, जिसमें क्रम संख्या 3504 दिनांक 08.11.2003 को दिखाया गया है कि टेसु कुमारी और नीरज कुमार सिंह ने रात में एक बेडरूम-2 में ठहरे थे, इसी प्रकार क्रम संख्या 3507 दिनांक 24.05.2003, 3275 दिनांक 16.11.2002 आदि दिखाते हैं कि प्रतिवादी नीरज कुमार सिंह ने पटना में एलआईसी के उक्त अतिथि गृह में आधिकारिक उद्देश्यों के लिए ठहरे थे।

प्रदर्श-9: जीवन बीमा निगम, भागलपुर की शिकायत समिति की अध्यक्ष, रेनू कुमारी घोष की दिनांक 02.12.2006 की सत्यापित फोटोस्टेट प्रति, जिसमें पाया गया कि नीरज कुमार सिंह ने टेसु कुमारी से कानूनी रूप से विवाह किया था।

प्रदर्श-10: प्रबंधक, ओ.एस., मंडल कार्यालय, पटना द्वारा जारी प्रमाण पत्र, जिसमें उपरोक्त अतिथि गृह पंजीकृत विवरण की सामग्री की पुष्टि की गई है, जिसमें दिखाया गया है कि टेसु कुमारी-याचिकाकर्ता और नीरज कुमार सिंह ने 08.11.2003 से 09.11.2003 तक मंडल कार्यालय अतिथि गृह में एक कमरे में ठहरे थे।

प्रदर्श-11: टेसु कुमारी द्वारा एस.पी. भागलपुर को दी गई शिकायत/रिपोर्ट की प्रति, जिसमें अपीलकर्ता के साथ विवाह और बाद में 10 लाख रुपये दहेज की मांग और अपीलकर्ता और उसके परिवार के सदस्यों द्वारा उसके साथ दुर्व्यवहार का उल्लेख है। पहले याचिका को 'X' के रूप में चिह्नित किया गया था।

प्रदर्श 11/1 पहले X/1 के रूप में चिह्नित - आर. के. दुबे का बयान। **प्रदर्श 11/2** पहले X/2 के रूप में चिह्नित - राजेश कुमार दुबे का बयान। **प्रदर्श 11/3** पहले X/3 के रूप में चिह्नित - पंडित पंकज कुमार झा का बयान। **प्रदर्श 11/4** पहले X/4 के रूप में चिह्नित - सुधीर कुमार ठाकुर का बयान दिनांक 23.11.2006 आदि, महिला कोशांग एस.पी. कार्यालय, भागलपुर की जांच समिति के समक्ष, जिसमें दिखाया गया है कि याचिकाकर्ता और विपक्षी पार्टी के बीच कथित विवाह 09.11.2003 को हिंदू रीति-रिवाजों के अनुसार संपन्न हुआ था।

मार्क Y से Y/9 - दस विभिन्न सकारात्मक तस्वीरें, जो पक्षों के जीवन में अंतरंग संबंध और आकस्मिक क्षणों को दिखाती हैं और ये तस्वीरें कथित रूप से मामले के रिकॉर्ड के साथ संलग्न सीडी से तैयार की गई हैं।

मार्क Y/10 - टेसु कुमारी का एलआईसी आईडी कार्ड, जिसमें उसे सीताराम ठाकुर की पुत्री और एलआईसी, भागलपुर में एचजीए के रूप में काम करते हुए दिखाया गया है, जन्म तिथि 01.01.1967, क्रम संख्या 354062, जारी करने की तिथि 27.07.2005 और **मार्क Y/11** टेसु कुमारी का मतदाता पहचान पत्र है, जिसमें क्रम संख्या टी.टी.एन 1182-211 है, जिसमें टेसु कुमारी को नीरज कुमार सिंह की पत्नी के रूप में दिखाया गया है।

06. दूसरी ओर, अपीलकर्ता ने परिवार न्यायालय के समक्ष निम्नलिखित मौखिक और दस्तावेजी साक्ष्य प्रस्तुत और परीक्षण किया गया-:

मौखिक साक्ष्य:

OPW-1 - केशव कुमार सिंह

OPW-2 - शिवजनी देवी

OPW-3 - निगम कुमार सिंह

OPW-4 - बिभा सिंह

OPW-5 - नीरज कुमार सिंह (विपक्षी पार्टी)

दस्तावेजी साक्ष्य:

प्रदर्श-ए: टेक्नो पॉइंट लेन, लाल बाग, तिलकामांझी के नीरज कुमार सिंह के संबंध में 04.02.2004 की तारीख का फेलोशिप परीक्षा, नवंबर 2003 का परिणाम की फोटोस्टेट प्रति।

प्रदर्श-बी: विधायक चुनाव, 2005 साहेबगंज के लिए नीरज कुमार सिंह की इयूटी के संबंध में 17.02.2005 की तारीख का आईडी और तस्वीरें।

प्रदर्श-सी: एलआईसी पटना डिवीजन के प्रबंधक से रिपोर्ट जारी करने के संबंध में एलआईसी रसीद, जिसमें दिखाया गया है कि नीरज कुमार सिंह 08.11.2003 से 09.11.2003 तक वहां ठहरे थे और वर्ष 2003 के पुराने रिकॉर्ड पहले ही नष्ट कर दिए गए हैं।

प्रदर्श-डी: एलआईसी विभागीय परीक्षा (हैंड-बुक) का मैनुअल मुद्रित रूप में।

प्रदर्श-ई: पटना से भागलपुर के लिए किडल और पटना से नौगछिया के लिए बरौनी के माध्यम से ट्रेन का एक नज़र में बुकलेट, रेलवे समय-सारणी जुलाई 2003 से जनवरी 2004 तक।

प्रदर्श-एफ: कोतवाली (आदमपुर) पी.एस. केस नंबर 288/2007 की 19.05.2007 की तारीख की प्रमाणित सच्ची प्रति, धारा 498ए आईपीसी और 3/4 दहेज निषेध अधिनियम के तहत टेसु कुमारी, याचिकाकर्ता द्वारा नीरज, शिवजनी देवी-नीरज की मां के खिलाफ, जिसमें 18.05.2007 की तारीख की टेसु कुमारी की लिखित रिपोर्ट शामिल है, जिसमें उसके खिलाफ कथित अत्याचार और क्रूरता और दहेज की मांग का उल्लेख है।

प्रदर्श-जी: नीरज कुमार सिंह का फेलोशिप परीक्षा नवंबर 2003 का परिणाम, 04.02.2004 की तारीख का, संबंधित एलआईसी विभाग के महासचिव द्वारा जारी।

प्रदर्श-एच: उच्च न्यायालय द्वारा 27.02.2008 को पारित आदेश की प्रमाणित सच्ची ज़ेरॉक्स प्रति, आपराधिक विविध संख्या 54883/2007, नीरज कुमार सिंह बनाम बिहार राज्य, जिसके द्वारा याचिकाकर्ता को जमानत दी गई है।

मार्क-X: कथित चिकित्सा पर्चे की 22.03.2012 की तारीख की सच्ची फोटोस्टेट प्रति।

मार्क-X/1: संहा संख्या 349/2006 की 25.01.2006 की तारीख की सच्ची फोटोस्टेट प्रति, नीरज कुमार सिंह बनाम टेसु कुमारी।

मार्क-X/2: संहा संख्या 2545/2006 की प्रति, नीरज बनाम टेसु कुमारी, 7.06.2006 की तारीख की, **मार्क-X/3:** एक और संहा संख्या 1467/2006, टेसु कुमारी बनाम नीरज कुमार सिंह और अन्य, 05.04.2006 की तारीख की।

मार्क-X/4: टेसु कुमारी द्वारा नीरज कुमार सिंह और अन्य के खिलाफ दर्ज एफआईआर की सच्ची फोटोस्टेट प्रति, 15.05.2007 की तारीख की। **मार्क-**

X/5: माननीय उच्च न्यायालय पटना द्वारा 27.02.2008 को पारित आदेश की सच्ची फोटोस्टेट प्रति, आपराधिक विविध संख्या 54883/2007 में। **मार्क-X/6:**

बिभा कुमारी, नीरज कुमार सिंह की पत्नी का मतदाता पहचान पत्र।

मार्क-X/7: नीरज कुमार सिंह, पुत्र-सचिदानंद सिंह का मतदाता पहचान पत्र की फोटोस्टेट प्रति। **मार्क-X/8:** टेसु कुमारी द्वारा एलआईसी भागलपुर को दी गई जानकारी की फोटोस्टेट प्रति। **मार्क-X/9:** टेसु कुमारी द्वारा वरिष्ठ प्रबंधक, एलआईसी भागलपुर को दी गई शिकायत की प्रति। **मार्क-X/10:** भागलपुर निर्वाचन क्षेत्र (विधायक) की 2010 की मतदाता सूची की प्रति, जिसमें दिखाया गया है कि बिभा देवी नीरज कुमार सिंह की पत्नी है।

माननीय परिवार न्यायालय के निष्कर्ष:

07. दोनों पक्षों की सुनवाई और रिकॉर्ड पर उपलब्ध मौखिक और दस्तावेजी साक्ष्यों पर विचार करने के बाद, परिवार न्यायालय ने निष्कर्ष निकाला कि वैवाहिक मामला जैसा कि प्रस्तुत किया गया है, बनाए रखने योग्य है और प्रतिवादी के पास मुकदमा दायर करने का वैध कारण है। प्रतिवादी अपीलकर्ता की पहली कानूनी रूप से विवाहित पत्नी है और वह अपीलकर्ता के खिलाफ वैवाहिक अधिकारों की पुनर्स्थापना के लिए डिक्री पाने की हकदार है। तदनुसार, परिवार न्यायालय ने प्रतिवादी के पक्ष में और अपीलकर्ता के खिलाफ मुकदमे को प्रतिस्पर्धा पर लेकिन बिना किसी लागत के डिक्री पारित की और आदेश दिया कि प्रतिवादी अपीलकर्ता की पहली कानूनी रूप से विवाहित पत्नी है और वह अपीलकर्ता के खिलाफ वैवाहिक अधिकारों की पुनर्स्थापना के लिए डिक्री पाने की हकदार है जैसा कि प्रार्थना की गई है और अपीलकर्ता कानूनी रूप से अपने वैवाहिक कर्तव्यों का निर्वहन करने और उसके साथ पति-पत्नी के रूप में वैवाहिक जीवन जीने के लिए बाध्य है।

पक्षों की ओर से प्रस्तुतियाँ:

08. अपीलकर्ता की ओर से उपस्थित अधिवक्ता ने प्रस्तुत किया कि अपील के तहत निर्णय और डिक्री कानून और तथ्यों की दृष्टि में गलत है और इसे रद्द किया जाना चाहिए। अधिवक्ता ने आगे प्रस्तुत किया कि निचली अदालत ने प्रतिवादी के पक्ष में गलत तरीके से मुकदमे को डिक्री किया, जबकि गवाहों के बयान और मामले में प्रदर्शित दस्तावेजों के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्रतिवादी अपीलकर्ता के साथ कथित विवाह को साबित करने में विफल रही। अधिवक्ता ने आगे प्रस्तुत किया कि निचली अदालत ने प्रतिवादी के पक्ष में डिक्री पारित करते समय गलत तरीके से ओ पी डब्लू-4 के गलत तरीके से दर्ज बयान पर भरोसा किया, जिसका अपीलकर्ता के अधिवक्ता द्वारा विरोध किया गया और इसे इस न्यायालय के समक्ष सी.डब्लू.जे.सी संख्या 13078/2013 में रिट क्षेत्राधिकार में चुनौती दी गई। विद्वान वकील ने आगे कहा कि विद्वान ट्रायल कोर्ट ने एचएमए की धारा 5 और 7 के तहत उल्लिखित कानून के प्रावधानों की अनदेखी करके अपील के तहत फैसला सुनाते समय खुद को गलत दिशा में निर्देशित किया, जो यह प्रदान करता है कि यदि विवाह उन धाराओं के प्रावधानों के अनुसार नहीं किया गया है। , तो एचएमए की धारा 9 के तहत कोई डिक्री पारित नहीं की जा सकती। विद्वान परिवार न्यायालय प्रतिवादी के पक्ष में वैवाहिक अधिकारों की पुनर्स्थापना की डिक्री पारित करने के लिए सक्षम नहीं है जब तक कि प्रश्न में विवाह को किसी सक्षम न्यायालय द्वारा वैध घोषित नहीं किया जाता। परिवार न्यायालय एच एम की धारा 9 के तहत डिक्री पारित करने के लिए सक्षम है जब यह स्वीकार किया जाता है कि प्रतिवादी अपीलकर्ता की कानूनी रूप से विवाहित पत्नी है, लेकिन वर्तमान मामले

में प्रतिवादी का विवाह स्वयं संदेह के घेरे में है। विद्वान परिवार न्यायालय ने गलत तरीके से प्रदर्श-1 पर भरोसा किया, जिसमें पक्षों के हस्ताक्षर और जारी करने की तिथि नहीं है। इसके अलावा, इस मामले में उक्त पंडित की परीक्षा नहीं हुई। प्रतिवादी के करीबी रिश्तेदार जैसे दीदी और जीजाजी भी प्रतिवादी के मामले की सत्यता को साबित करने और स्थापित करने के लिए आगे नहीं आए। इसी प्रकार, प्रदर्श-8 (अतिथि गृह रजिस्टर का अंश), जिसमें कथित रूप से पक्षों के हस्ताक्षर हैं, को अपीलकर्ता द्वारा विवादित किया गया, क्योंकि अपीलकर्ता वहां आधिकारिक उद्देश्य के लिए ठहरा था, जिसमें अपीलकर्ता के हस्ताक्षर जाली और मनगढ़ंत हैं। अधिवक्ता ने आगे प्रस्तुत किया कि प्रदर्श-9 (शिकायत समिति की अध्यक्ष की रिपोर्ट, एलआईसी) एक पक्षीय कार्यवाही है, जबकि अध्यक्ष की जिरह के दौरान यह खुलासा हुआ कि उक्त गवाह अपीलकर्ता और प्रतिवादी को 2006 से जानता था और हालांकि कथित विवाह 09.11.2003 को हुआ था और कथित विवाह में उपस्थित व्यक्तियों की पहचान इस गवाह द्वारा नहीं की जा सकी। अधिवक्ता ने आगे प्रस्तुत किया कि निचली अदालत ने अपीलकर्ता के दस्तावेजों को गलत तरीके से अविश्वास किया, जो प्रथम दृष्ट्यता साबित करते हैं कि 09.11.2003 को शाम 5:00 बजे तक अपीलकर्ता पटना में उपस्थित था। 09.11.2003 को अपीलकर्ता पटना में विभागीय परीक्षा में भाग ले रहा था और 5:00 बजे तक वहां था और 09.11.2003 को दादर एक्सप्रेस से भागलपुर के लिए 02:55 बजे निकलने का कोई सवाल ही नहीं था क्योंकि 09.11.2003 रविवार था और उस दिन दादर एक्सप्रेस उपलब्ध नहीं थी। यह तथ्य स्पष्ट रूप से साबित करता है कि कथित विवाह उस तिथि को कभी संपन्न नहीं हुआ जैसा कि प्रतिवादी द्वारा दावा किया गया है और प्रतिवादी का

पूरा मामला इस तथ्य से झूठा साबित होता है। अधिवक्ता ने आगे प्रस्तुत किया कि पी डब्लू-1 की जिरह के पैरा-1 में '2004' के स्थान पर '2002' के रूप में वर्ष को सही करके हेरफेर की गई थी। निचली अदालत को प्रतिवादी के मामले को रिकॉर्ड पर उपलब्ध दलीलों और साक्ष्यों के आधार पर खारिज कर देना चाहिए था जो प्रतिवादी के मामले का समर्थन नहीं करते हैं। विद्वान अधिवक्ता ने आगे प्रस्तुत किया कि निचली अदालत ने कानून द्वारा निहित अपने अधिकार क्षेत्र को पार कर लिया है और इसलिए अपील के तहत निर्णय विकृत है और इसे रद्द किया जाना चाहिए।

09. दूसरी ओर, प्रतिवादी की ओर से उपस्थित वरिष्ठ अधिवक्ता श्री गणपति त्रिवेदी ने प्रस्तुत किया कि विद्वान परिवार न्यायालय द्वारा पारित निर्णय और डिक्री में कोई खामी नहीं है। विद्वान परिवार ने पक्षों की ओर से प्रस्तुत और परीक्षण किए गए मौखिक और दस्तावेजी साक्ष्यों पर विचार करने के बाद पाया कि प्रतिवादी अपीलकर्ता की पहली कानूनी रूप से विवाहित पत्नी है और याचिकाकर्ता/प्रतिवादी की ओर से वैवाहिक अधिकारों की पुनर्स्थापना के लिए दायर याचिका को स्वीकार कर लिया। श्री त्रिवेदी ने आगे प्रस्तुत किया कि पी डब्लू-5, रोहित कुमार ठाकुर ने अपनी मुख्य परीक्षा और जिरह में प्रतिवादी के अपीलकर्ता के साथ 09.11.2003 को विवाह संपन्न होने के तथ्य का पूरी तरह से समर्थन किया। जहां तक पी डब्लू-1 की जिरह के पैरा-1 में हेरफेर का सवाल है, अपीलकर्ता ने निचली अदालत द्वारा पी डब्लू-1 के बयान को दर्ज करते समय कथित हेरफेर पर कोई आपत्ति नहीं उठाई और कानून स्पष्ट है कि यदि निचली अदालत द्वारा बयान की कोई गलत रिकॉर्डिंग की जाती है, तो इसे तुरंत अदालत के संज्ञान में लाना चाहिए, लेकिन अपीलकर्ता की ओर से निचली अदालत के समक्ष कोई

आवेदन या आपत्ति दायर नहीं की गई। इसलिए ऐसी आपत्ति खारिज करने योग्य है। श्री त्रिवेदी ने आगे प्रस्तुत किया कि पी डब्लू-1 ने अपनी गवाही के पैरा-4 में कहा कि पंकज कुमार झा ने हिंदू रीति-रिवाजों के अनुसार विवाह संपन्न किया, 'सप्तपदी' की गई, सिंदूर लगाया गया और सभी ने जोड़े को आशीर्वाद दिया और इस प्रभाव के लिए पंडित पंकज कुमार झा ने प्रमाण पत्र (प्रदर्शनी-1) प्रदान किया और इस मुद्दे पर अपीलकर्ता की ओर से कोई जिरह नहीं की गई। श्री त्रिवेदी ने आगे प्रस्तुत किया कि पी डब्लू-2, कैलाश रजक ने भी हिंदू रीति-रिवाजों के अनुसार विवाह, 'सप्तपदी', सिंदूर लगाने और पंडित पंकज कुमार झा द्वारा विवाह संपन्न होने का समर्थन किया। अपनी गवाही के पैरा-3 में, इस गवाह ने पवित्र अग्नि के चारों ओर कदम उठाने की कहानी का समर्थन किया, सिवाय गलत गिनती के और इसी तरह, अन्य गवाहों ने भी विवाह के तथ्य और 'कन्यादान' के तथ्य का समर्थन किया जो सुधीर ठाकुर द्वारा किया गया था। प्रतिवादी ने खुद को पी डब्लू-4 के रूप में परीक्षण किया और अपनी गवाही के पैरा-9 में, उसने समर्थन किया कि विवाह उपरोक्त नामित व्यक्तियों की उपस्थिति में संपन्न हुआ था। श्री त्रिवेदी ने आगे प्रस्तुत किया कि प्रारंभ में, पंडित पंकज कुमार झा को प्रतिवादी की ओर से गवाह के रूप में उद्धृत किया गया था, लेकिन वह अपनी परीक्षा के लिए अदालत में नहीं आए क्योंकि वह अपीलकर्ता के साथ मिलीभगत में आ गए थे। हालांकि, रिकॉर्ड से स्पष्ट है कि वह अपनी गवाही के लिए महिला कोशांग में उपस्थित हुए। श्री त्रिवेदी ने आगे प्रस्तुत किया कि एलआईसी की महिला शिकायत समिति की अध्यक्ष, रेनू घोष, को पी डब्लू-7 के रूप में परीक्षण किया गया, जहां उन्होंने एलआईसी की महिला शिकायत समिति की अध्यक्ष के रूप में दिए गए अपने निष्कर्षों को साबित किया, जिसे

साक्ष्य के रूप में प्रदर्शनी-9 के रूप में लिया गया। उक्त निष्कर्ष प्रतिवादी के मामले का समर्थन करते हैं कि अपीलकर्ता और प्रतिवादी दोनों का विवाह हुआ था। प्रदर्शनी-9 से यह भी पता चलता है कि पंडित पंकज कुमार का बयान दर्ज किया गया था, जिससे यह स्पष्ट है कि उन्होंने हिंदू रीति-रिवाजों के अनुसार प्रतिवादी का विवाह अपीलकर्ता के साथ संपन्न किया। वरिष्ठ अधिवक्ता ने आगे प्रस्तुत किया कि जहां तक दादर एक्सप्रेस के न चलने के दावे का सवाल है, परिवार न्यायालय ने इस तथ्य पर विचार किया और निकटवर्ती स्टेशनों के माध्यम से विभिन्न मार्गों से ट्रेनों के चलने के बारे में प्रस्तुतियों को स्वीकार किया।

निष्कर्ष:

10. रिकॉर्ड और प्रतिद्वंद्वी प्रस्तुतियों को देखने के बाद, इस न्यायालय द्वारा निर्धारण के लिए निम्नलिखित बिंदु निर्धारित किए गए हैं:

- (I) क्या प्रतिवादी अपीलकर्ता की कानूनी रूप से विवाहित पत्नी है?
- (II) यदि हां, तो क्या प्रतिवादी वैवाहिक अधिकारों की पुनर्स्थापना की हकदार है या नहीं?

बिंदु संख्या (I):

11. यह स्वीकार किया गया है कि अपीलकर्ता और प्रतिवादी वर्ष 2003 में एक साथ काम कर रहे थे। विवाह संपन्न होने के बिंदु पर, पंडित की परीक्षा नहीं हुई, हालांकि ओ पी-4, विभा सिंह की गवाही में यह आया है कि 'महिला अपराध प्रकोष्ठ' में पंडित ने यह बयान दिया कि उन्होंने अपीलकर्ता का विवाह प्रतिवादी के साथ संपन्न

किया। उक्त पंडित ने एक प्रमाण पत्र भी जारी किया, जिसे आपत्ति के साथ प्रदर्शनी के रूप में चिह्नित किया गया, कि उन्होंने प्रतिवादी का विवाह अपीलकर्ता के साथ संपन्न किया। दोनों पक्षों द्वारा परीक्षण किए गए सभी गवाह विभिन्न स्तरों के हित वाले गवाह प्रतीत होते हैं और उनके बयान की सावधानीपूर्वक परीक्षा और दस्तावेजों के पढ़ने की आवश्यकता होगी ताकि एक न्यायसंगत निष्कर्ष पर पहुंचा जा सके।

12. प्रतिवादी पक्ष का मुख्य गवाह स्वयं प्रतिवादी है, जिसने पी डब्ल्यू-4 के रूप में गवाही दी। अपनी गवाही में, उसने कहा कि उसका विवाह नीरज कुमार सिंह, अपीलकर्ता के साथ 09.11.2003 को भागलपुर में रविंद्र रजक के घर में पंडित पंकज कुमार झा और दोनों पक्षों के रिश्तेदारों की उपस्थिति में संपन्न हुआ। विवाह के बाद, उसने 04.04.2006 तक अपीलकर्ता के साथ वैवाहिक जीवन बिताया। उसने आगे गवाही दी कि बाद में, उसके पति की भावनाएं उसके प्रति काफी बदल गईं और उसे पता चला कि उसके पति ने भारी दहेज लेकर और अपनी मां के दबाव में दूसरी महिला से विवाह कर लिया। 05.04.2006 को, वह अपने ससुराल गई लेकिन उसे बाहर निकाल दिया गया और 10,00,000 रुपये की मांग की गई। गवाह ने आगे गवाही दी कि जब उसके पति ने वैवाहिक जीवन को बहाल करने से इनकार कर दिया, तो उसने महिला अपराध प्रकोष्ठ को आवेदन संख्या 56/2006 दिया। पुलिस अधीक्षक, भागलपुर के महिला प्रकोष्ठ के परामर्श केंद्र में, उसके पति ने उपस्थित होकर अपनी असमर्थता दिखाते हुए गवाह के साथ वैवाहिक जीवन को बहाल करने से इनकार कर दिया। महिला प्रकोष्ठ के समक्ष, पंडित पंकज कुमार झा, सुधीर कुमार ठाकुर, राकेश दुबे और राजेश दुबे ने गवाह के दावे के समर्थन में अपने बयान दर्ज कराए। गवाह ने आगे गवाही दी कि उसने एक

आपराधिक मामला संख्या जी. आर. 1374/2007 दर्ज किया, जो अभी भी भागलपुर के उप मंडल न्यायिक मजिस्ट्रेट की अदालत में लंबित है और पुलिस ने इस मामले में आरोप पत्र दाखिल किया है जिसमें उसे अपीलकर्ता की पहली विवाहित पत्नी बताया गया है।

अपनी जिरह में, उसने दोहराया कि उसका विवाह 09.11.2013 को संपन्न हुआ और उसने आगे गवाही दी कि विवाह की तारीख को, वह दादर ट्रेन से रात 09:30-10:00 बजे पटना से भागलपुर आई। ट्रेन शाम 03:00-4:00 बजे पटना से रवाना हुई। उसकी पहली बैठक में पटना में परीक्षा थी और दूसरी बैठक में उसकी कोई परीक्षा नहीं थी। गवाह ने आगे गवाही दी कि अपीलकर्ता की भी दूसरी बैठक में कोई परीक्षा नहीं थी। गवाह ने आगे गवाही दी कि वर्ष 2003 से 2007 तक, उसने कार्यालय रिकॉर्ड में खुद को अविवाहित दिखाया। 1997 से, जब उसने सेवा में शामिल हुई, 2007 तक, उसने अपने पिता को कार्यालय रिकॉर्ड में अपना नामांकित व्यक्ति नामित किया क्योंकि उसके पति ने उनके अंतरजातीय विवाह को गुप्त रखना चाहा। गवाह ने आगे गवाही दी कि उसके पति ने 23.11.2005 को बिभा कुमारी सिंह से दूसरा विवाह किया और इस तथ्य को छिपाते हुए, उसके पति ने 04.04.2006 तक उससे मुलाकात की। गवाह ने आगे गवाही दी कि विवाह समारोह की कोई फोटोग्राफी नहीं हुई, हालांकि, उसके निवास पर अपीलकर्ता के एक मित्र द्वारा ली गई एक संयुक्त तस्वीर है, लेकिन वह इस मित्र का नाम नहीं बता सकी। गवाह ने आगे गवाही दी कि साहेबगंज में उसके स्थानांतरण के एक साल बाद, अपीलकर्ता को उसी स्थान पर स्थानांतरित कर दिया गया। उक्त स्थानांतरण दोनों पक्षों के अनुरोध पर हुआ था। गवाह ने यह भी गवाही दी

कि 01.11.2003 को, वह और अपीलकर्ता पटना में थे और उन्होंने 09.11.2003 को विवाह करने का निर्णय लिया और 09.11.2003 की रात को, उसकी बहन के बेटे ने *पंडित* को बुलाया। गवाह ने यह भी गवाही दी कि विवाह के बाद, उसने तीन अवसरों पर साहेबगंज में एक होटल में ठहरी, जहां उसने अपीलकर्ता का नाम अपने पति के रूप में उल्लेख किया, लेकिन उसके पति ने कहीं भी अपने हस्ताक्षर नहीं किए। गवाह ने यह भी गवाही दी कि उसने एलआईसी ऑफ इंडिया के महिला शिकायत प्रकोष्ठ के समक्ष एक शिकायत की, जिसमें उसने अपीलकर्ता के साथ अपने विवाह के बारे में बताया, लेकिन वह यह नहीं कह सकी कि उसने विवाह की तारीख दी या नहीं। हालांकि, उसने *पंडित* द्वारा जारी प्रमाण पत्र दाखिल किया, जिसमें उसकी विवाह तिथि 09.11.2003 बताई गई। गवाह ने अपनी जिरह में आगे गवाही दी कि अपीलकर्ता के गांव से कोई भी विवाह समारोह में शामिल नहीं हुआ।

13. पी डब्ल्यू-1, महेश प्रसाद सिंह, ने अपनी गवाही में प्रतिवादी के अपीलकर्ता के साथ विवाह के दावे का समर्थन किया। इस गवाह ने गवाही दी कि उसने विवाह में भाग लिया जो *पंडित* पंकज कुमार झा द्वारा हिंदू रीति-रिवाजों के अनुसार संपन्न हुआ। पवित्र अग्नि के सात फेरे लिए गए और उसके बाद माथे पर सिंदूर लगाने की रस्म की गई। *पंडित* पंकज कुमार झा ने विवाह का प्रमाण पत्र दिया, जिस पर गवाह ने दूल्हे की ओर से हस्ताक्षर किए। गवाह ने यह भी गवाही दी कि अपीलकर्ता ने प्रतिवादी के साथ अपने विवाह को गुप्त रखा, लेकिन बाद में, जब प्रतिवादी अपीलकर्ता के घर गई, तो उसे रखने से इनकार कर दिया।

अपनी जिरह में, इस गवाह ने भी गवाही दी कि विवाह 09.11.2003 को संपन्न हुआ, लेकिन वह दिन के बारे में नहीं कह सका। विवाह समारोह रात 10:00 बजे से 11:30 बजे के बीच संपन्न हुआ। विवाह में गवाह, उसके बहनोई विकास सिंह और नंदरानी देवी शामिल हुए। गवाह ने आगे गवाही दी कि उसे अपीलकर्ता ने विवाह में आमंत्रित किया था। लगभग 09:15 बजे, वह भागलपुर रेलवे स्टेशन पर था, क्योंकि वह अपनी बहनोई, नंदरानी देवी के इलाज के लिए तिलकामांझी गया था, जिनकी मृत्यु हो चुकी है, लेकिन वह उनकी मृत्यु की तारीख नहीं बता सका। गवाह ने आगे गवाही दी कि दूल्हे की ओर से, वह, उसका बहनोई और उसकी बहनोई विवाह समारोह में शामिल हुए, जबकि लड़की की ओर से चार लोग समारोह में शामिल हुए। अपीलकर्ता के माता-पिता या भाई-बहन उपस्थित नहीं थे। गवाह ने आगे गवाही दी कि वह बचपन से अपीलकर्ता को जानता है, लेकिन वे संबंधित नहीं हैं। हालांकि, गवाह ने गवाही दी कि वह अपीलकर्ता के दादा का नाम नहीं बता सका। गवाह ने स्वीकार किया कि प्रतिवादी उसके भाइयों मुरारी सिंह के जमानतदारों में से एक है, जो दोषी ठहराए जाने और आजीवन कारावास की सजा पाने के बाद जमानत पर है। गवाह ने आगे बताया कि अपीलकर्ता और प्रतिवादी की शादी के तथ्य को लगभग तीन वर्षों तक गुप्त रखा गया था। गवाह ने इस सुझाव से इनकार किया कि चूंकि यहां प्रतिवादी टेसू कुमारी गवाह के भाई के लिए जमानतदार बनी है, इसलिए वह उसके पक्ष में झूठी गवाही दे रहा है।

14. पी डब्ल्यू-2, कैलाश रजक, प्रतिवादी के दूसरे गवाह हैं, जिन्होंने निचली अदालत के समक्ष अपनी मुख्य परीक्षा में गवाही दी कि वह दोनों पक्षों को पति-पत्नी के रूप में जानते हैं। उन्होंने आगे गवाही दी कि टेसू कुमारी का विवाह हिंदू रीति-

रिवाजों के अनुसार पवित्र अग्नि के चारों ओर फेरे लेकर पंडित द्वारा 09.11.2003 को रात 11:30 बजे आदमपुर में रविंद्र रजक के घर में संपन्न हुआ।

अपनी जिरह में, पी डब्लू-2 ने गवाही दी कि टेसु कुमारी उसकी बहन जैसी थी और उसे गवाह से उसकी स्टाफ रेखा कुमारी ने मिलवाया था। गवाह ने आगे गवाही दी कि टेसु कुमारी डीएसपी रविंद्र रजक के घर में रहती थी। गवाह ने अपनी जिरह में आगे गवाही दी कि टेसु कुमारी का विवाह 09.11.2003 को नीरज कुमार के साथ संपन्न हुआ और विवाह में नीरज कुमार के चाचा, महेश सिंह, महेश सिंह के बहनोई, विकास सिंह और विकास सिंह की पत्नी नंदरानी सिंह शामिल हुए। हालांकि, गवाह ने कहा कि वह इन व्यक्तियों के नीरज कुमार के साथ संबंध के बारे में नहीं कह सकता। पी डब्लू-2 ने आगे गवाही दी कि उसने लड़की की ओर से विवाह में भाग लिया और अन्य व्यक्ति जो विवाह में शामिल हुए थे, वे थे सुधीर कुमार ठाकुर (जीजा), रोहित कुमार ठाकुर और टेसु कुमारी की बहन। विवाह समारोह रात 11:00 बजे शुरू हुआ और आधे घंटे के भीतर समाप्त हो गया। दूल्हे ने पवित्र अग्नि के पांच फेरे लिए और दूल्हे ने दुल्हन के माथे पर सिंदूर लगाया। विवाह के दौरान कोई फोटोग्राफी नहीं हुई, जिसे एक पंडित ने संपन्न किया, जिसने विवाह का कोई प्रमाण पत्र नहीं दिया। गवाह ने आगे गवाही दी कि उसे टेसु कुमारी की बहन के बेटे, रोहित कुमार ठाकुर ने अपने मोबाइल फोन नंबर 9955211387 पर रात 08:00 बजे के आसपास कॉल करके विवाह में बुलाया था। गवाह ने आगे गवाही दी कि विवाह के समय, टेसु कुमारी भागलपुर के एलआईसी कार्यालय में काम कर रही थी और उसकी बहन का बेटा उसके साथ रहता था। गवाह ने आगे गवाही दी कि वह टेसु कुमारी के माता-पिता या भाई-बहनों के बारे में नहीं

जानता। गवाह ने यह भी गवाही दी कि वह विवाह से दो महीने पहले नीरज कुमार सिंह को जानता था। विवाह के समय, रविंद्र रजक अपने घर में उपस्थित नहीं थे और रेखा कुमारी भी विवाह के समय उपस्थित नहीं थीं। गवाह ने अपनी जिरह में आगे गवाही दी कि लड़की का *कन्यादान* उसके बहनोई (जीजा) द्वारा किया गया।

15. पी डब्लू-3, विकास सिंह ने भी अपनी मुख्य परीक्षा में गवाही दी कि टेसु कुमारी का विवाह नीरज कुमार सिंह के साथ 09.11.2003 को संपन्न हुआ। गवाह ने आगे गवाही दी कि 09.11.2003 को, वह अपनी पत्नी के इलाज के लिए अपने बहनोई के साथ भागलपुर गया था और भागलपुर स्टेशन पर ट्रेन का इंतजार कर रहा था। ट्रेन पटना से भागलपुर आई और उसके बहनोई महेश सिंह का एक सह-ग्रामवासी एक लड़की के साथ उतरा। इसके बाद, वह, उसकी पत्नी और उसका बहनोई दूल्हे की ओर से विवाह में भाग लेने और उन्हें आशीर्वाद देने के लिए आदमपुर, भागलपुर के एक घर में गए। 09.11.2003 को, वरमाला के आदान-प्रदान के बाद, *पंडित* पंकज कुमार झा द्वारा विवाह संपन्न हुआ और उन्होंने नवविवाहित जोड़े को आशीर्वाद दिया। गवाह ने आगे गवाही दी कि *पंडित* पंकज कुमार झा ने विवाह का प्रमाण पत्र जारी किया, जिस पर उन्होंने गवाह के रूप में हस्ताक्षर किए।

अपनी जिरह में, गवाह ने गवाही दी कि उसने पहली बार 09.11.2003 को टेसु कुमार और नीरज कुमार सिंह को जाना। गवाह ने दोहराया कि उसने दूल्हे की ओर से विवाह में भाग लिया, हालांकि उसका उनसे कोई संबंध नहीं था। गवाह ने अपनी जिरह में आगे गवाही दी कि उसकी पत्नी का ब्रेन ट्यूमर का इलाज चल रहा था और उसकी मृत्यु 11.05.2007 को हुई। गवाह ने आगे गवाही दी कि वे स्टेशन पर 08:30

बजे पहुंचे और अपीलकर्ता और महेश सिंह से स्टेशन पर मिले। गवाह ने आगे गवाही दी कि वह यह नहीं कह सकता कि नीरज सिंह किसी ट्रेन से उतरे थे या नहीं। महेश सिंह ने 09:20 बजे नीरज सिंह से उनका परिचय कराया कि नीरज सिंह उनके गांव के हैं। गवाह ने आगे गवाही दी कि वह, महेश सिंह, उसकी पत्नी, नीरज सिंह और 5-6 अन्य व्यक्ति भी उपस्थित थे और वे सभी टेसु कुमारी के घर गए। वह उन 5-6 अन्य व्यक्तियों को नहीं जानता था। टेसु कुमारी के घर पर, विवाह समारोह रात 10:00 बजे शुरू हुआ और यह लगभग 11:00 बजे समाप्त हुआ। जब गवाह स्थान पर पहुंचा, तो पहले से ही पांच व्यक्ति विवाह स्थल पर उपस्थित थे। इस गवाह ने भी गवाही दी कि विवाह में कोई फोटोग्राफी नहीं हुई, लेकिन गवाह ने अपनी जिरह में आगे गवाही दी कि वरमाला के आदान-प्रदान के बाद, दुल्हन और दूल्हे ने पवित्र अग्नि के चारों ओर फेरे लिए और पंडित द्वारा मंत्रों का उच्चारण किया गया। पंडित ने गवाह के रूप में हस्ताक्षर करने के लिए महेश सिंह को एक कागज दिया। गवाह ने यह भी गवाही दी कि उसने और उसकी पत्नी ने भी दूल्हे की ओर से गवाह के रूप में उक्त कागज पर हस्ताक्षर किए। हालांकि, गवाह ने गवाही दी कि उसने यह नहीं देखा कि दुल्हन की ओर से गवाह कौन था।

16. पी डब्ल्यू-5, रोहित कुमार ठाकुर ने अपनी मुख्य परीक्षा में गवाही दी कि याचिकाकर्ता टेसु कुमारी उनकी मौसी हैं और नीरज कुमार सिंह टेसु कुमारी के पति और उनके मौसा हैं। दोनों भारतीय जीवन बीमा निगम में काम कर रहे हैं। गवाह ने आगे गवाही दी कि वह 2000 में अपनी पढ़ाई के लिए अपनी मौसी के साथ रहते थे। गवाह ने आगे गवाही दी कि 09.11.2003 की सुबह, नीरज कुमार और टेसु कुमारी ने उन्हें

अपने मोबाइल फोन पर विवाह की तैयारी करने के लिए कहा। उन्होंने अपने मामा कैलाश रजक के साथ विवाह की तैयारी शुरू की और पंडित पंकज कुमार झा द्वारा बताए गए अनुसार अपनी मां के साथ बाजार से विवाह के सामान खरीदे। 09.11.2003 की रात को, दोनों पक्ष पटना से भागलपुर आए और तीन अन्य व्यक्तियों के साथ विवाह स्थल पर पहुंचे। गवाह ने आगे गवाही दी कि विवाह लगभग 10:30 बजे हिंदू रीति-रिवाजों के अनुसार और गवाहों की उपस्थिति में पंडित पंकज कुमार झा द्वारा संपन्न हुआ और विवाह समारोह में इस गवाह के माता-पिता, कैलाश रजक, महेश सिंह, विकास सिंह, नंद रानी देवी आदि शामिल हुए। गवाह ने आगे गवाही दी कि कन्यादान उनके पिता सुधीर ठाकुर द्वारा किया गया। विवाह समारोह की समाप्ति के बाद, पंडित पंकज कुमार झा ने विवाह का एक लिखित प्रमाण पत्र दिया, जिस पर गवाह ने भी विवाह के गवाह के रूप में हस्ताक्षर किए। गवाह ने आगे गवाही दी कि उन्होंने नीरज कुमार सिंह को एक उपहार के रूप में एक नोकिया मोबाइल फोन दिया और उन्हें मोबाइल फोन के संचालन के बारे में भी मार्गदर्शन किया। विवाह के बाद दोनों पक्ष आदमपुर, भागलपुर और साहेबगंज में पति-पत्नी के रूप में रहने लगे और यह गवाह अपनी मौसी के साथ रहा। पति और पत्नी के बीच सौहार्दपूर्ण संबंध 2006 तक जारी रहे। वैवाहिक विवाद तब उत्पन्न हुआ जब टेसु कुमारी को 2006 में अपने पति के दूसरे विवाह के बारे में पता चला। टेसु कुमारी 2006 में अपने पति के घर गई, जहां उनके पति नीरज कुमार सिंह और उनकी मां ने दहेज, नकदी आदि की मांग की और उनके साथ दुर्व्यवहार किया।

अपनी जिरह में, इस गवाह ने गवाही दी कि विवाह के समय, उनके माता-पिता रोसेरा से आए और उन्होंने विवाह में भाग लिया। गवाह ने आगे गवाही दी

कि उन्हें नीरज और उनकी मौसी के विवाह के बारे में पता चला और उन्हें 04:00 बजे फोन आया। गवाह ने आगे गवाही दी कि 09.11.2003 की सुबह भी फोन आया था। लेकिन वह फोन नंबर याद नहीं कर सके। उन्होंने कैलाश मामा और पंडित पंकज कुमार झा को फोन किया। उन्होंने उन्हें 04:00 बजे के बाद बताया और उनके माता-पिता भागलपुर में उपस्थित थे। गवाह ने आगे गवाही दी कि विवाह में कोई फोटोग्राफी नहीं हुई। केवल नीरज और टेसु की एक संयुक्त तस्वीर ली गई। गवाह ने आगे गवाही दी कि टेसु कुमारी के माता-पिता और भाई को विवाह के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। जिस इमारत में वह रहती थी, वहां से कोई भी व्यक्ति विवाह में आमंत्रित नहीं था। गवाह ने यह भी गवाही दी कि उक्त विवाह में, उनके माता-पिता, कैलाश रजक और पंडित पंकज कुमार झा टेसु कुमारी की ओर से शामिल हुए। नीरज कुमार की ओर से दो पुरुष और एक महिला शामिल हुए, लेकिन वह उनके नाम नहीं जानते। ये व्यक्ति विवाह के बाद रात में रुके। गवाह ने आगे गवाही दी कि दादर एक्सप्रेस 09.11.2003 को रात 10:00 बजे पटना से भागलपुर आई और रस्में लगभग 10:50 बजे शुरू हुईं।

17. पी डब्ल्यू-6 विवाह के एक सुनी-सुनाई गवाह प्रतीत होते हैं और इस गवाह ने गवाही दी कि टेसु कुमारी और नीरज कुमार सिंह का विवाह नवंबर 2003 में संपन्न हुआ और वे भागलपुर में पति-पत्नी के रूप में रह रहे थे और दोनों भारतीय जीवन बीमा निगम में काम कर रहे थे। गवाह ने आगे गवाही दी कि अपनी पहली शादी के तथ्य को छिपाते हुए, अपनी मां के दबाव में, नीरज कुमार सिंह ने अपनी जाति की एक लड़की से गुप्त रूप से दूसरा विवाह किया, ताकि टेसु कुमारी को इसके बारे में पता न चले। दूसरे विवाह के बारे में जानने पर, टेसु कुमारी 2006 में अपने ससुराल डोगाछी

तरार आई, जहां नीरज कुमार और उनकी मां ने उनके साथ दुर्यवहार किया और उन्हें अपने घर से बाहर निकाल दिया। फिर 2008 में, टेसु कुमारी अपने ससुराल डोगाछी गईं। टेसु कुमारी की स्थिति को देखते हुए, ग्रामीणों ने पुलिस अधीक्षक भागलपुर और एसडीजेएम, भागलपुर को आवेदन दिया ताकि टेसु कुमारी को नीरज कुमार सिंह के साथ वैवाहिक जीवन जीने की अनुमति दी जा सके और उक्त आवेदन पर अन्य ग्रामीणों के साथ इस गवाह ने भी हस्ताक्षर किए। टेसु कुमारी की असहाय स्थिति को देखते हुए, नीरज कुमार की चाची, श्रीमती करुणा देवी ने 2008 में उन्हें अपनी बहू के रूप में अपने घर में रहने की अनुमति दी और तब से वह वहां रह रही हैं।

अपनी जिरह में गवाह ने गवाही दी कि वह टेसु कुमारी को नवंबर 2003 से जानते हैं और उनका विवाह 09.11.2003 को संपन्न हुआ था, लेकिन उन्होंने विवाह में भाग नहीं लिया। उन्होंने विवाह के बारे में सुना है। उन्हें 10.11.2003 को विवाह के बारे में पता चला। गवाह ने आगे गवाही दी कि उनका टेसु कुमारी से कोई संबंध नहीं है और नीरज कुमार सिंह उनके पड़ोसी थे। गवाह ने आगे गवाही दी कि नीरज कुमार सिंह ने हजारीबाग की एक लड़की से दूसरा विवाह किया और इस गवाह ने उक्त विवाह में 'बारात' में भाग लिया, लेकिन उन्हें विवाह की तारीख, महीना और वर्ष याद नहीं है। गवाह ने आगे गवाही दी कि पुलिस अधीक्षक, भागलपुर को दिया गया आवेदन टेसु कुमारी का था, जिसमें कहा गया था कि टेसु कुमारी अपने ससुराल में रहना चाहती थी, लेकिन उसे अनुमति नहीं दी जा रही थी। गवाह ने आगे गवाही दी कि उन्होंने टेसु कुमारी को पहली बार 2006 में अपने गांव में देखा। विवाह से पहले, टेसु कुमारी भागलपुर में रह रही थी, जबकि नीरज कुमार सिंह अपने गांव में रहते थे।

वर्तमान में टेसु भागलपुर में रह रही है और वह नीरज कुमार सिंह के गांव के घर में नहीं रह रही है। टेसु डोगाछी में नीरज कुमार के चाचा के घर में रह रही है।

18. पी डब्लू-7, श्रीमती रेनू कुमारी, निचली अदालत के समक्ष प्रतिवादी की अंतिम गवाह हैं, जिन्होंने अपनी मुख्य परीक्षा में गवाही दी कि वह भारतीय जीवन बीमा निगम, भागलपुर की महिला शिकायत समिति की अध्यक्ष हैं और एक वकील भी हैं। वह दोनों पक्षों को जानती हैं जो भारतीय जीवन बीमा निगम में काम कर रहे हैं। गवाह ने आगे गवाही दी कि टेसु कुमारी ने 2006 में अपने पति नीरज कुमार सिंह के खिलाफ उक्त समिति में एक शिकायत याचिका दी। उक्त शिकायत के आधार पर, लिखित नोटिस देने के बाद, दोनों पक्षों को बुलाया गया। शिकायतकर्ता की ओर से, एक संयुक्त तस्वीर, सीडी, पंडित द्वारा जारी विवाह प्रमाण पत्र, होटल की रजिस्टर प्रविष्टि आदि साक्ष्य के रूप में प्रस्तुत किए गए। गहन जांच की गई और दोनों पक्षों को सुना गया। पंडित पंकज कुमार झा भी उपस्थित थे, जिन्होंने दोनों पक्षों का विवाह हिंदू रीति-रिवाजों के अनुसार संपन्न करने के बारे में बताया और एक विवाह प्रमाण पत्र भी दिया, जिस पर दोनों पक्षों के गवाहों के हस्ताक्षर थे। गवाह ने आगे गवाही दी कि उन्होंने साहेबगंज के शिवलोक होटल के प्रवेश रजिस्टर की भी जांच की, जहां दोनों पक्ष पति-पत्नी के रूप में ठहरे थे। गवाह ने यह भी गवाही दी कि एलआईसी, साहेबगंज के शाखा कार्यालय के स्टाफ और साहेबगंज में किराए पर लिए गए परिसर के मकान मालिक ने भी पुष्टि की कि याचिकाकर्ता और प्रतिवादी पति-पत्नी के रूप में रह रहे थे। गवाह ने आगे गवाही दी कि सभी साक्ष्यों की जांच के बाद, दिसंबर 2006 में, महिला शिकायत

समिति ने अपना निर्णय दिया कि शिकायतकर्ता टेसु कुमारी नीरज कुमार सिंह की कानूनी रूप से विवाहित पत्नी थी।

अपनी जिरह में, गवाह ने गवाही दी कि वह 09.09.2006 से टेसु कुमारी को जानती हैं और उसी समय से नीरज कुमार सिंह को भी जानती हैं। गवाह ने आगे गवाही दी कि उन्होंने विवाह में शामिल सभी व्यक्तियों के बयान दर्ज नहीं किए, सिवाय पंडित पंकज कुमार झा के, जिन्होंने यह बयान दिया कि उन्होंने दोनों पक्षों का विवाह संपन्न किया। जांच के बाद, उन्होंने सभी दस्तावेज एलआईसी कार्यालय को सौंप दिए। दोनों पक्षों की एक संयुक्त तस्वीर ली गई थी, जिसे भी एलआईसी कार्यालय को सौंप दिया गया। गवाह ने आगे गवाही दी कि उनके पास वह शिकायत नहीं है जो टेसु कुमारी ने उनके विभाग को दी थी। हालांकि, गवाह ने गवाही दी कि उन्होंने साहेबगंज के एक होटल में विवाह के बाद पति-पत्नी के रूप में रहने के बारे में जांच की और उन्होंने एलआईसी कार्यालय को एक रिपोर्ट सौंपी। गवाह ने आगे गवाही दी कि वह यह नहीं कह सकती कि रजिस्टर पर नीरज कुमार के हस्ताक्षर थे या नहीं। गवाह ने आगे गवाही दी कि टेसु कुमारी अरुण कुमार शर्मा के घर में किरायेदार के रूप में रह रही थी, लेकिन वह कितने समय तक वहां रही और रहने की अवधि क्या थी, वह नहीं कह सकती। एक मकान मालिक मिश्रा जी थे और उन्होंने उनसे जांच की। गवाह ने आगे गवाही दी कि उन्होंने दो मकान मालिकों के बयान दर्ज किए। गवाह ने आगे गवाही दी कि उन्होंने टेसु कुमारी का बयान दर्ज किया, लेकिन वह यह नहीं कह सकती कि उन्होंने महेश सिंह, अनीता ठाकुर, विकास सिंह, सुधीर ठाकुर, नंद रानी देवी और कैलाश रजक का बयान दर्ज किया या नहीं। गवाह ने आगे गवाही दी कि एलआईसी की जांच

समिति की अध्यक्ष वह स्वयं, एम.पी. चंद्रन, पुष्पा रानी और प्रबंधक राजीव कुमार थे। गवाह ने आगे गवाही दी कि टेसु कुमारी से शिकायत याचिका प्राप्त करने के बाद, उन्होंने दस्तावेजों में उल्लिखित दोनों पक्षों की स्थिति के बारे में जांच नहीं की।

19. दूसरी ओर, अपीलकर्ता नीरज कुमार सिंह की ओर से परीक्षण किए गए गवाहों ने सभी ने नीरज कुमार सिंह और टेसु कुमारी के विवाह से इनकार किया है। यहां उल्लेख करना प्रासंगिक है कि अपीलकर्ता के सभी गवाह उनके करीबी रिश्तेदार हैं जैसे भाई, मां और उनकी पत्नी। ओ पी डब्लू-1 केशव कुमार सिंह, ओ पी डब्लू-3 निगम कुमार सिंह अपीलकर्ता के भाई हैं। ओ पी डब्लू-2, शिवजनी देवी अपीलकर्ता की मां हैं जबकि ओ पी डब्लू-4 बिभा सिंह अपीलकर्ता की पत्नी हैं।

20. ओ पी डब्लू-1, 2 और 3 की मुख्य परीक्षा लगभग समान है। गवाहों ने अपनी मुख्य परीक्षा में गवाही दी कि नीरज कुमार सिंह का विवाह 23.11.2005 को हिंदू रीति-रिवाजों के अनुसार बिभा सिंह, पुत्री-आच्युतानंद सिंह, ग्राम-खैरा, जिला-चतरा के साथ दोनों पक्षों के लोगों की उपस्थिति में देवघर में संपन्न हुआ। गवाहों ने आगे गवाही दी कि टेसु कुमारी ने उनके घर में प्रवेश करने की कोशिश की और नीरज कुमार सिंह ने 2006 में भागलपुर के मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट की अदालत में एक सूचना याचिका दी। गवाहों ने यह भी गवाही दी कि वे टेसु कुमारी को केवल इसलिए जानते हैं क्योंकि उन्होंने नीरज कुमार सिंह को एक आपराधिक मामले में झूठा फंसाया। गवाहों ने यह भी गवाही दी कि यह गलत था कि नीरज कुमार सिंह ने टेसु कुमारी से विवाह किया है। ओ पी डब्लू-2 ने भी गवाही दी कि टेसु कुमारी ने मई 2007 में उनके और उनके बेटे के खिलाफ दहेज की मांग और उक्त मांग के अनुसार यातना के लिए एक

मामला दर्ज कराया। ओ पी डब्लू-2 ने आगे गवाही दी कि 2006 में, टेसु कुमारी ने दावा किया कि उसने नीरज कुमार सिंह से विवाह किया है, लेकिन जब उनके बेटे ने विवाह से स्पष्ट रूप से इनकार किया, तो उन्होंने टेसु कुमारी को घर में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी। ओ पी डब्लू-2 ने आगे गवाही दी कि टेसु कुमारी द्वारा उनके खिलाफ दायर आपराधिक मामला अभी भी फास्ट ट्रैक कोर्ट नंबर 5, भागलपुर में लंबित है।

अपनी जिरह में, ओ पी डब्लू-1 ने गवाही दी कि उनका दूसरा नाम रामबदन है और वह 15 वर्षों से सेना में काम कर रहे हैं और 2003 में वह मेरठ में तैनात थे। लेकिन वह यह नहीं कह सके कि 09.11.2003 को उनकी तैनाती कहाँ थी। गवाह ने आगे गवाही दी कि नीरज कुमार सिंह उनके बड़े भाई हैं और वह 2003 में साहेबगंज में तैनात थे और उन्हें नीरज कुमार सिंह और टेसु कुमारी के विवाह के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। 2006 में, टेसु कुमारी ने जबरन उनके घर में प्रवेश करने की कोशिश की और उनके प्रयास को ग्रामीणों ने विफल कर दिया। गवाह ने यह भी गवाही दी कि सितंबर 2007 में, नीरज एक झूठे मामले में जेल गए और आगे गवाही दी कि यह गलत था कि 05.05.2008 को टेसु कुमारी को समझौते के लिए गांव में बुलाया गया था। गवाह ने इस बात से इनकार किया कि उनकी मां ने टेसु कुमारी से 10,00,000 रुपये की मांग की। गवाह ने यह भी गवाही दी कि वह महेश सिंह को जानते हैं, लेकिन यह नहीं कह सकते कि वह ग्राम पंचायत में वरिष्ठ 'पंच' हैं या नहीं। गवाह ने यह भी गवाही दी कि वह नहीं जानते कि महेश सिंह विवाह में उपस्थित थे या नहीं। गवाह ने अपनी जिरह में आगे गवाही दी कि विमलेन्द्र सिंह उनके अपने चाचा थे और उनकी पत्नी का नाम करुणा है। उन्होंने इस सुझाव से इनकार किया कि टेसु

कुमारी विमलेन्द्र सिंह के घर में रह रही है। गवाह ने आगे गवाही दी कि टेसु कुमारी एक या दो दिन के लिए घर में रही। गवाह ने यह भी सुझाव से इनकार किया कि जब टेसु कुमारी उनके चाचा के घर में रह रही थी, तो रामबदन ने उनके चाचा के घर को नुकसान पहुंचाया। गवाह ने आगे गवाही दी कि टेसु कुमारी और नीरज कुमार सिंह 2003 में साहेबगंज में एक ही कार्यालय में तैनात थे।

ओ पी डब्लू-2 ने अपनी जिरह में गवाही दी कि उन्होंने कोई मामला दर्ज नहीं किया जब टेसु कुमारी ने 2006 में कुछ असामाजिक तत्वों के साथ उनके घर में प्रवेश करने की कोशिश की। गवाह ने आगे गवाही दी कि नीरज द्वारा संपन्न एकमात्र विवाह बिभा देवी के साथ है और उन्होंने कोई अन्य विवाह नहीं किया है। गवाह ने आगे गवाही दी कि अक्टूबर 2003 में वह अपनी बेटी के घर नागपुर गईं और जनवरी 2004 में वापस आईं। गवाह ने यह भी गवाही दी कि उनका बेटा नीरज 2003 से 2007 तक साहेबगंज में तैनात था और इस अवधि के दौरान उन्होंने कभी अपने बेटे के घर का दौरा नहीं किया। वह यह भी जानती हैं कि टेसु कुमारी भी संबंधित अवधि में साहेबगंज में तैनात थी। गवाह ने आगे गवाही दी कि उन्हें भागलपुर के महिला प्रकोष्ठ से कभी कोई नोटिस नहीं मिला और उन्होंने 2006 में टेसु कुमारी पर हमला नहीं किया। गवाह ने स्वीकार किया कि टेसु कुमारी ने दहेज के संबंध में यातना के लिए एक मामला दर्ज किया है जिसमें वह भी आरोपी हैं। मई 2008 में, टेसु कुमारी उनके घर आईं। गवाह ने आगे गवाही दी कि विमलेन्द्र सिंह उनके छोटे देवर हैं और उनकी पत्नी का नाम करुणा है। 2008 में, करुणा ने टेसु कुमारी को रहने के लिए अपने घर का एक हिस्सा दिया। गवाह ने आगे गवाही दी कि उन्होंने इस संबंध में करुणा देवी से कोई

जांच नहीं की। गवाह ने आगे गवाही दी कि उन्हें यह जानकारी नहीं है कि उनके बेटे नीरज ने टेसु कुमारी से विवाह किया है।

अपनी जिरह में, ओ पी डब्लू-3 निगम कुमार सिंह ने गवाही दी कि वह 2000 से सेना में काम कर रहे हैं। गवाह ने आगे गवाही दी कि उन्होंने टेसु कुमारी और नीरज कुमार सिंह के विवाह का दस्तावेज नहीं देखा है और आगे गवाही दी कि कोई विवाह संपन्न नहीं हुआ और कोई दस्तावेजी प्रमाण नहीं है।

21. ओ पी डब्लू-4, बिभा सिंह ने अपनी मुख्य परीक्षा में गवाही दी कि उनके पिता ने नीरज कुमार सिंह के पिता के साथ विवाह की बातचीत की और उनका विवाह 23.11.2005 को नीरज कुमार सिंह के साथ संपन्न हुआ। गवाह ने आगे गवाही दी कि वह शिक्षित महिला हैं और विवाह के समय उनके पास रसायन विज्ञान में डिग्री थी। उनका विवाह देवघर मंदिर में रिश्तेदारों और दोस्तों की उपस्थिति में हिंदू रीति-रिवाजों के अनुसार संपन्न हुआ। विवाह के बाद वह अपने ससुराल आई और अपने पति के साथ वैवाहिक जीवन शुरू किया और 02.12.2007 को जुड़वां बेटियों को जन्म दिया। गवाह ने आगे गवाही दी कि विवाह के तुरंत बाद, टेसु कुमारी ने उनके पति को धमकी देना शुरू कर दिया कि वह उससे भी विवाह करें अन्यथा वह उन्हें झूठे मामले में फंसा देंगी। उस समय टेसु कुमारी भागलपुर में काम कर रही थीं जबकि उनके पति साहेबगंज में तैनात थे। धमकी मिलने पर, उनके पति ने 25.01.2006 को मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, भागलपुर को एक सूचना याचिका दी। गवाह ने आगे गवाही दी कि 05.04.2006 को, टेसु कुमारी ने कुछ असामाजिक तत्वों की मदद से उनके घर में प्रवेश करने की कोशिश की, लेकिन वह अपने इरादों में सफल नहीं हो सकीं। टेसु कुमारी

ने पहले 2006 में एक सूचना दी, और उसके बाद एक आपराधिक मामला दर्ज किया। लेकिन उन्होंने कभी यह दावा नहीं किया कि उनका विवाह आदमपुर में रविंद्र रजक के घर में संपन्न हुआ और यह दिखाता है कि उनका विवाह का दावा निराधार और तुच्छ है। गवाह ने यह भी गवाही दी कि टेसु कुमारी का उनके पति के साथ केवल वही संबंध था कि दोनों एक ही विभाग में काम कर रहे थे। उनके पति का अगस्त 2007 में भागलपुर स्थानांतरण हुआ जबकि टेसु कुमारी ने मार्च 2005 में साहेबगंज से भागलपुर स्वैच्छिक स्थानांतरण लिया। गवाह ने यह भी गवाही दी कि टेसु कुमारी का दावा कि उनके पति और उनके परिवार के सदस्य दहेज की मांग के कारण उन्हें स्वीकार नहीं कर रहे थे, पूरी तरह से झूठा और शरारती है। उनके ससुराल वाले दहेज के लालची लोग नहीं हैं और उन्होंने उनके पिता से कोई दहेज नहीं मांगा। गवाह ने आगे गवाही दी कि टेसु कुमारी का दावा पूरी तरह से झूठा और शरारती है।

अपनी जिरह में गवाह ने गवाही दी कि विवाह के समय नीरज कुमार सिंह की उम्र लगभग 35 वर्ष थी और उनके पिता ने ग्रामीणों से पूछा कि नीरज कुमार सिंह ने 35 वर्ष की उम्र तक विवाह क्यों नहीं किया और उन्हें पता चला कि नीरज कुमार सिंह की बहन का विवाह 2002 में हुआ था और चूंकि नीरज कुमार सिंह को कोई प्रस्ताव पसंद नहीं आया, इसलिए उन्होंने विवाह नहीं किया। गवाह ने आगे गवाही दी कि वह जानती थी कि उनके पति की सूचना का उद्देश्य यह था कि टेसु कुमारी फोन पर धमकी दे रही थीं। गवाह ने आगे गवाही दी कि वह महिला प्रकोष्ठ में नीरज कुमार सिंह के साथ उपस्थित थीं। महिला प्रकोष्ठ में, पंडित पंकज कुमार झा ने टेसु कुमारी और नीरज कुमार सिंह का विवाह संपन्न करने के बारे में बताया। राकेश

दुबे और राजीव दुबे ने भी कहा कि उन्होंने टेसु कुमारी को नीरज सिंह के साथ समझौता स्थिति में देखा और उन्होंने उन्हें विवाह संपन्न करने का सुझाव दिया। गवाह ने यह भी गवाही दी कि टेसु कुमारी उनके पति की चाची के घर में एक महीने तक रही। गवाह ने यह भी गवाही दी कि उन्हें अदालत में टेसु कुमारी द्वारा प्रदान की गई सीडी को देखने का अवसर नहीं मिला। उन्होंने यह भी गवाही दी कि उन्होंने उन ग्रामीणों से कोई बात नहीं की जिन्होंने टेसु कुमारी की ओर से आवेदन दिया। गवाह ने आगे गवाही दी कि 28.10.2008 को, वह तिलकामांझी के घर आई और उसके बाद नवंबर 2008 में, टेसु कुमारी उनके चाची-सास के घर डोगाछी में आई। गवाह ने इस सुझाव से इनकार किया कि टेसु कुमारी और नीरज सिंह का अंतरजातीय विवाह संपन्न हुआ और इस कारण उनके परिवार ने उनका दूसरा विवाह उनके साथ संपन्न किया। इस गवाह ने इस सुझाव से भी इनकार किया कि नीरज सिंह की पत्नी होने के नाते, वह झूठी गवाही दे रही हैं।

22. प्रतिवादी नीरज कुमार सिंह ने निचली अदालत के समक्ष ओ पी डब्लू-5 के रूप में अपना बयान दर्ज किया। इस गवाह ने अपनी मुख्य परीक्षा में शुरुआत में डीएसपी रवींद्र रजक के घर पर टेसु कुमारी के साथ अपने विवाह से इनकार किया और इस दावे को शरारती और झूठा बताया। गवाह ने आगे गवाही दी कि 2003 में, गवाह और प्रतिवादी साहेबगंज शाखा में एलआईसी में काम कर रहे थे और उनके बीच केवल पेशेवर संबंध थे। प्रतिवादी ने कभी गवाह से विवाह का प्रस्ताव नहीं किया। मार्च 2005 में, प्रतिवादी ने स्वेच्छा से साहेबगंज से भागलपुर स्थानांतरण प्राप्त किया जबकि गवाह अगस्त 2007 तक साहेबगंज में रहा। गवाह ने आगे गवाही दी कि जब

वह साहेबगंज में तैनात थे, तो जिला-चतरा के निवासी आच्युतानंद सिंह ने अपनी बेटी के साथ गवाह का विवाह प्रस्तावित किया और उसके बाद नवंबर 2005 में उनका विवाह बिभा कुमारी के साथ देवघर मंदिर में हिंदू रीति-रिवाजों के अनुसार संपन्न हुआ। तब से, दोनों एक साथ रह रहे हैं और 2 दिसंबर 2007 को जुड़वां बेटों का जन्म हुआ। गवाह ने आगे गवाही दी कि जनवरी 2006 में, प्रतिवादी ने अपने विवाह के इरादे का खुलासा करते हुए गवाह को धमकी देना शुरू कर दिया कि उन्होंने विवाह क्यों किया और गवाह ने स्पष्ट किया कि चूंकि वह अविवाहित थे, उन्होंने अपने माता-पिता की इच्छाओं के अनुसार विवाह किया। इसके बाद, प्रतिवादी ने खुलासा किया कि वह गवाह से विवाह करना चाहती थी। इसके बाद, प्रतिवादी ने गवाह को धमकी देना शुरू कर दिया, जिसने 25 जनवरी 2006 को मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, भागलपुर के समक्ष एक सूचना याचिका दायर की। इसके बाद, प्रतिवादी ने 05 जून 2006 को सूचना याचिका संख्या 1467/2006 दायर की, जिसमें दावा किया गया कि दोनों ने भगवान को साक्षी मानकर विवाह संपन्न किया और नीरज कुमार सिंह ने प्रतिवादी को मंदिर का प्रमाण पत्र दिया, लेकिन यह तथ्य पूरी तरह से झूठा है और यह भी प्रतिवादी के 09.11.2003 को विवाह होने के दावे को झूठा साबित करता है। गवाह ने आगे गवाही दी कि प्रतिवादी ने एलआईसी, भागलपुर के वरिष्ठ मंडल प्रबंधक को एक आवेदन दिया, जिसमें प्रतिवादी ने विवाह की कोई तिथि नहीं दी। फिर, जब प्रतिवादी ने 18.05.2007 को गवाह और उसकी मां के खिलाफ आपराधिक मामला दर्ज किया, तो उस मामले में, उसने 09.11.2003 को भागलपुर में कुछ व्यक्तियों की उपस्थिति में *पंडित* द्वारा विवाह होने के बारे में कुछ भी उल्लेख नहीं किया और केवल यह कहा कि 09.11.2003 से, दोनों एक

साथ रह रहे थे, लेकिन यह तथ्य पूरी तरह से झूठा है। गवाह ने आगे गवाही दी कि प्रतिवादी को एलआईसी कार्यालय में अपनी वैवाहिक स्थिति प्रस्तुत करनी थी, लेकिन 2003 से 2007 तक, प्रतिवादी ने खुद को अविवाहित दिखाया और इस तथ्य के आधार पर, गवाह को पटना उच्च न्यायालय से जमानत मिली। इसके बाद, 2008 से प्रतिवादी ने खुद को विवाहित दिखाना शुरू कर दिया। गवाह ने आगे गवाही दी कि अपने विवाह के बारे में जानने के बाद, प्रतिवादी ने कुछ व्यक्तियों के साथ मिलकर, जो हमेशा पैसे के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार रहते थे, एक आपराधिक मामला दर्ज किया और उस मामले में, गवाह को पटना उच्च न्यायालय से जमानत मिली। गवाह ने आगे गवाही दी कि हालांकि *पंडित पंकज कुमार झा* को गवाह के रूप में उद्धृत किया गया था, लेकिन प्रतिवादी ने उन्हें अपने गवाह के रूप में परीक्षण करने से इनकार कर दिया। प्रतिवादी के बहनोई, सुधीर कुमार ठाकुर, का परीक्षण नहीं किया गया, हालांकि उनका नाम गवाहों में से एक के रूप में उल्लेख किया गया था। ये सभी तथ्य वर्तमान मामले की झूठी होने को दर्शाते हैं। गवाह ने आगे गवाही दी कि कथित विवाह की तारीख को, वह विभागीय परीक्षा में भाग लेने के लिए पटना गए थे और शाम 5:00 बजे तक वहां रहे। उसी रात, गवाह ने स्थान छोड़ दिया और 10.11.2003 को साहेबगंज पहुंचे। गवाह ने आगे गवाही दी कि उन्होंने केवल बिभा कुमारी के साथ हिंदू रीति-रिवाजों के अनुसार विवाह संपन्न किया और उसके बाद वे पति-पत्नी के रूप में रह रहे थे। गवाह ने आगे गवाही दी कि वह 2003 से अगस्त 2007 तक साहेबगंज में रहे और इस अवधि के दौरान कभी भागलपुर में नहीं रहे। गवाह ने आगे गवाही दी कि उन्होंने कभी टेसु कुमारी के साथ पति-पत्नी के रूप में नहीं रहे और कोई शारीरिक संबंध नहीं था।

अपनी जिरह में, गवाह ने गवाही दी कि वह जानते थे कि प्रतिवादी की याचिका वैवाहिक संबंधों की पुनर्स्थापना के लिए दायर की गई थी। गवाह ने यह भी गवाही दी कि उन्होंने प्रतिवादी के गवाहों की जिरह की। गवाह ने यह भी गवाही दी कि वह नहीं जानते कि प्रतिवादी की जाति क्या थी, हालांकि वह जाति से 'राजपूत' थे। गवाह ने आगे गवाही दी कि वह 15.10.1992 से एलआईसी में काम कर रहे हैं और दिसंबर 2002 में साहेबगंज में शामिल हुए। गवाह ने भागलपुर में रविंद्र रजक के घर में प्रतिवादी के रहने के बारे में जानकारी से इनकार किया। गवाह ने प्रतिवादी के पहचान पत्र की पहचान की और कहा कि यह पहचान पत्र 27.05.2006 को जारी किया गया था। उक्त प्रमाण पत्र में, पते के कॉलम में, देखभाल रविंद्र रजक, डीएसपी, सी.सी. मुखर्जी रोड, आदमपुर, भागलपुर लिखा था। गवाह ने इस सुझाव से इनकार किया कि साहेबगंज शाखा में तैनाती के दौरान, वह और प्रतिवादी अपने कल्याण के बारे में दैनिक आधार पर बातचीत करते थे। गवाह ने गवाही दी कि बातचीत कार्यालय के काम के संबंध में थी। उन्होंने इस सुझाव से भी इनकार किया कि वह और प्रतिवादी एक साथ रहते थे। गवाह ने इस सुझाव से भी इनकार किया कि वह और प्रतिवादी अरुण शर्मा और अनुकुल मिश्रा के घर में किराए पर पति-पत्नी के रूप में रहते थे। गवाह को गवाह और प्रतिवादी की एक संयुक्त तस्वीर दिखाई गई। इस तस्वीर को देखकर, गवाह ने गवाही दी कि यह तस्वीर चुनाव विभाग में प्रस्तुत तस्वीर के आधार पर तैयार की गई थी और तस्वीर जाली तरीके से तैयार की गई थी। गवाह ने संयुक्त तस्वीर के बारे में गलत बयान देने के सुझाव से इनकार किया और यह भी इनकार किया कि प्रदर्शित तस्वीर उनके दोस्त द्वारा आदमपुर निवास पर ली गई थी।

गवाह ने अपनी जिरह में आगे गवाही दी कि उन्होंने अपनी रिपोर्ट में प्रतिवादी द्वारा दायर कॉम्पैक्ट डिस्क को देखने के लिए कोई आवेदन नहीं दायर किया। गवाह को एक पहचान पत्र दिखाया गया। इसे देखकर, गवाह ने गवाही दी कि यह चुनाव विभाग द्वारा जारी किया गया था। गवाह ने इस सुझाव से भी इनकार किया कि वह प्रतिवादी के आदमपुर निवास पर जाते थे और वह प्रतिवादी के साथ पति के रूप में रहते थे। गवाह ने गवाही दी कि उनके सह-ग्रामवासी, अमन कुमार सिंह का घर गवाह के घर के पीछे स्थित है। गवाह ने आगे गवाही दी कि विमलेन्द्र सिंह और करुणा देवी उनके अपने चाचा और चाची हैं। गवाह ने आगे गवाही दी कि उन्हें यह जानकारी नहीं है कि प्रतिवादी ने विमलेन्द्र सिंह के घर में कितने दिन बिताए। गवाह ने आगे गवाही दी कि यह प्रतिवादी की ओर से गलत है कि अपने विवाह को छिपाने के लिए, उन्होंने देवघर मंदिर में विवाह संपन्न किया और कहा कि उनका विवाह उनके गांव में हुआ। गवाह ने अपनी जिरह में आगे गवाही दी कि वह नहीं जानते कि विवाह 'अग्नि' को साक्षी मानकर संपन्न किए जाते हैं। गवाह ने स्वीकार किया कि 05.04.2006 को, टेसु कुमारी ने 4-5 असामाजिक तत्वों की मदद से उनके घर में प्रवेश करने की कोशिश की, लेकिन वह सफल नहीं हो सकीं। गवाह ने इस सुझाव से इनकार किया कि उनके साक्ष्य के पैरा-9 में किया गया बयान गलत है। गवाह ने इस सुझाव से भी इनकार किया कि वह सच्चाई छिपा रहे थे और उन्होंने अपने माता-पिता से प्रतिवादी के साथ अपने विवाह के बारे में तथ्य छिपाया और कहा कि उनका विवाह प्रतिवादी के साथ संपन्न नहीं हुआ था। गवाह ने गवाही दी कि उन्हें एलआईसी के महिला प्रकोष्ठ को प्रतिवादी द्वारा दी गई शिकायत के बारे में जानकारी है। गवाह ने यह जानकारी होने से इनकार

किया कि प्रतिवादी ने अपनी सेवा-पुस्तिका में उन्हें अपने पति के रूप में नामांकित किया। गवाह ने आगे गवाही दी कि 2002-03 में जब भी वह अपनी विभागीय परीक्षा देने गए, तो वह अतिथि गृह या होटल में ठहरे और अपने विभाग के अतिथि गृह में आगमन और प्रस्थान के समय हस्ताक्षर किए। गवाह ने अतिथि गृह के रजिस्टर के 7 पृष्ठों की पहचान की, जिसमें आगमन और प्रस्थान दिखाया गया था, जो उनकी हस्तलिपि में था, लेकिन पृष्ठ 3504 पर अपनी लिखावट और हस्ताक्षर से इनकार किया। गवाह ने आगे गवाही दी कि नवंबर 2003 में, वह परीक्षा देने के लिए अपने विभाग के अतिथि गृह में ठहरे थे, लेकिन वह यह नहीं कह सके कि प्रतिवादी कहां ठहरी थीं। हालांकि, गवाह ने गवाही दी कि वह यह याद नहीं कर सके कि 9 नवंबर 2003 को परीक्षा के दौरान वह कहां ठहरे थे और इस सुझाव से इनकार किया कि वह और प्रतिवादी एक ही स्थान पर ठहरे थे। गवाह ने अपनी जिरह में आगे गवाही दी कि उन्हें यह जानकारी है कि 498 ए के मामले में केस डायरी में उल्लिखित कुछ गवाहों ने अपने बयान में कहा कि उन्होंने प्रतिवादी के साथ उनके विवाह में भाग लिया। गवाह ने आगे गवाही दी कि उन्हें यह जानकारी है कि 498 ए के मामले में, *पंडित* द्वारा विवाह के लिए दिया गया लिखित प्रमाण पत्र दायर किया गया था। गवाह को एलआईसी की शिकायत समिति का निर्णय दिखाया गया और गवाह ने कहा कि यह श्रीमती रेनू कुमारी घोष का निर्णय था। गवाह ने आगे गवाही दी कि उन्हें यह जानकारी है कि पटना में एलआईसी के अतिथि गृह में ठहरने की लागत एमआर के माध्यम से जमा की जाती है और वह जानते हैं कि 09.11.2003 को कमरे नंबर 2 में ठहरने के लिए एमआर किसके नाम पर जारी किया गया था। गवाह ने इस सुझाव से इनकार किया कि

उन्होंने पटना के एलआईसी अतिथि गृह के रजिस्टर के संबंध में अपनी पिछली जिरह में सच्चाई छिपाई। गवाह ने आगे गवाही दी कि एलआईसी अतिथि गृह परीक्षा केंद्र और स्टेशन के बीच स्थित था और परीक्षा केंद्र और स्टेशन की दूरी लगभग 3-4 किलोमीटर है। गवाह ने आगे गवाही दी कि उन्होंने 09.11.2003 को परीक्षा की दूसरी पाली में 02:00 से 05:00 बजे तक भाग लिया।

23. पक्षों के साक्ष्यों के विश्लेषण से, यह दोनों पक्षों का स्वीकार किया गया तथ्य है कि अपीलकर्ता और प्रतिवादी सहकर्मी के रूप में काम कर रहे थे और उस अवधि के दौरान एक ही स्थान पर तैनात थे जब विवाह का दावा किया गया है, अर्थात् 09.11.2003 को। इसके बाद, पक्षों की ओर से पूरी तरह से विरोधाभासी दावे हैं। भागलपुर के परिवार न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश ने पक्षों के साक्ष्यों का विस्तार से विश्लेषण किया और यह निष्कर्ष निकाला कि प्रतिवादी का विवाह 09.11.2003 को अपीलकर्ता के साथ संपन्न हुआ और वह उनकी पहली कानूनी रूप से विवाहित पत्नी हैं।

24. अपीलकर्ता की ओर से तर्कों से, साक्ष्यों की गलत सराहना पर जोर दिया गया है, विशेष रूप से, दस्तावेजी साक्ष्य जैसे कि प्रदर्शनी 1, जिसे *पंडित* द्वारा जारी एक प्रमाण पत्र बताया गया है जिसने विवाह समारोह संपन्न किया, मुख्य रूप से इस आधार पर कि उक्त *पंडित* का परीक्षण नहीं किया गया। हालांकि, प्रतिवादी की ओर से यह तर्क दिया गया है कि *पंडित* को अपीलकर्ता पक्ष द्वारा प्रभावित किया गया था और इस कारण से, उनका परीक्षण नहीं किया गया। हालांकि, अन्य परिस्थितियां हैं, जो न्यायालय को एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुंचने में मदद कर सकती हैं। ओ पी डब्ल्यू-4 ने अपनी जिरह में स्वीकार किया कि उक्त *पंडित* पंकज कुमार झा महिला प्रकोष्ठ (महिला

कोशांग) के समक्ष आए और प्रतिवादी का नीरज कुमार सिंह के साथ विवाह समारोह संपन्न करने के बारे में बताया। इसके अलावा, ओ पी डब्लू-4 ने यह भी स्वीकार किया कि राकेश दुबे और राजीव दुबे नामक व्यक्ति भी उपस्थित थे, जिन्होंने कहा कि उन्होंने नीरज सिंह को प्रतिवादी के साथ समझौता स्थिति में देखा और उन्हें विवाह संपन्न करने की सलाह दी। इसके अलावा, प्रदर्शनी 11/1 से प्रदर्शनी 11/4 श्रृंखला हैं, जो कुछ व्यक्तियों के बयान हैं जो मामले से परिचित हैं, जो महिला कोशांग, एसपी कार्यालय, भागलपुर की जांच समिति के समक्ष दर्ज किए गए हैं, जो प्रतिवादी के दावे का समर्थन करते हैं कि विवाह समारोह 09.11.2003 को संपन्न हुआ था। इसके अलावा, प्रदर्शनी 8 और 10 दिखाते हैं कि अपीलकर्ता और प्रतिवादी एक ही कमरे में एक साथ रहे और यह भी एक प्रासंगिक तथ्य है क्योंकि यह अपीलकर्ता और प्रतिवादी के अंतरंग संबंध को दर्शाता है। इसके अलावा, जो तस्वीरें Y से Y/9 के रूप में चिह्नित की गई हैं, वे समान प्रकृति की हैं। यह भी पक्षों के अंतरंग संबंध को प्रकट करता है क्योंकि तस्वीरें काफी स्पष्ट हैं। हालांकि तस्वीरों को प्रदर्शनी के रूप में चिह्नित नहीं किया गया है और वे स्वीकार्य साक्ष्य की श्रेणी में नहीं आती हैं, लेकिन उन्हें उनके पुष्टिकरण प्रकृति को देखते हुए और चूंकि कॉम्पैक्ट डिस्क की सत्यता, जिससे तस्वीरें निकाली गई हैं, को चुनौती नहीं दी गई है, उन्हें आसानी से खारिज नहीं किया जा सकता है। हालांकि प्रदर्शनी 11/1 से 11/4 को चिह्नित करने पर आपत्तियां उठाई गईं, लेकिन कुछ दस्तावेजों को प्रदर्शनी के रूप में रिकॉर्ड पर लिया गया है और परिवार न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश के आदेशों से, यह प्रतीत होता है कि उठाई गई आपत्तियों को खारिज कर दिया गया और सही तरीके से। इसके अलावा, प्रदर्शनी-9 भी अपीलकर्ता के साथ प्रतिवादी के विवाह के

पक्ष में एक सहायक दस्तावेज है। यह दस्तावेज 2 दिसंबर, 2006 का है और यदि अपीलकर्ता और प्रतिवादी को नोटिस दिया गया था और विवाह के बारे में तथ्य को एलआईसी की शिकायत समिति के अध्यक्ष के रूप में काम करने वाले एक तटस्थ व्यक्ति द्वारा दर्ज किया गया था, तो ऐसी रिपोर्ट को कानून की दृष्टि में कुछ वजन प्राप्त होता है।

25. इसके अलावा, आईपीसी की धारा 498ए के तहत अपीलकर्ता के अभियोजन से संबंधित दस्तावेज और शिकायत याचिका आदि भी पक्षों के वैवाहिक संबंध के अस्तित्व का संकेत देते हैं। इसके अलावा, प्रतिवादी और अपीलकर्ता के गवाहों की गवाही में कुछ तथ्य सामने आए हैं। अपीलकर्ता के गवाहों (ओपी के गवाह) द्वारा स्वीकार किया गया है कि प्रतिवादी को अपीलकर्ता के अपने चाचा और चाची द्वारा लगभग एक महीने तक रहने की अनुमति दी गई थी। कोई भी व्यक्ति अपने घर में किसी अजनबी को तब तक रहने की अनुमति नहीं देगा जब तक कि कुछ प्रकार का संबंध न हो और यह तथ्य सामान्य ज्ञान है। जब प्रतिवादी ने याचिकाकर्ता के रूप में अपना मामला प्रस्तुत किया कि अपीलकर्ता और प्रतिवादी अलग-अलग जातियों से संबंधित थे और अपीलकर्ता अपने माता-पिता से प्रतिवादी के साथ अपने संबंध को छिपाना चाहता था और इस कारण से, अपीलकर्ता से कोई स्वीकृति की उम्मीद नहीं की जाती है। यदि यह अपीलकर्ता के परिवार के सदस्यों की पीठ पीछे संपन्न हुआ विवाह था, तो स्वाभाविक रूप से, अपीलकर्ता और उसका परिवार ऐसे विवाह से इंकार करेगा। लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि अपीलकर्ता के अपने चाचा और चाची ने प्रतिवादी के दावे पर विश्वास किया और उसे अपने घर में लगभग एक महीने तक रहने की अनुमति दी।

अपीलकर्ता द्वारा ली गई एक रक्षा यह है कि प्रतिवादी ने एलआईसी में अपनी सेवा पुस्तक में 2007 तक खुद को अविवाहित बताया, लेकिन यह उपरोक्त कारणों से हो सकता है और अपीलकर्ता को यह सुझाव दिया गया था कि यह अपीलकर्ता के कहने पर था।

26. इस प्रकार, संभावनाओं की प्रबलता के प्रकाश में, हमारा मानना है कि याचिकाकर्ता, जो यहां प्रतिवादी है, के साक्ष्यों में कुछ खामियों के बावजूद, अपीलकर्ता और प्रतिवादी के बीच 09.11.2003 को हिंदू रीति-रिवाजों के अनुसार विवाह संपन्न हुआ था।

27. इसके अलावा, प्रतिवादी की मौखिक गवाही विवाह के बिंदु पर अडिग और अप्रतिवादित है। प्रतिवादी के गवाह विभिन्न प्रकार के हैं और उन सभी को रुचि रखने वाले गवाह नहीं कहा जा सकता है, बल्कि यह तर्क के समय एक दलील के रूप में लिया गया है कि अपनी बहन और बहनोई, जो विवाह के समय उपस्थित थे, प्रतिवादी के मामले का समर्थन करने के लिए गवाह के रूप में उपस्थित नहीं हुए। हालांकि, जो भी गवाह उपस्थित हुए, उन्होंने 09.11.2003 को अपीलकर्ता के साथ प्रतिवादी के विवाह के बारे में प्रतिवादी के मामले का समर्थन किया। इसके अलावा, अपीलकर्ता प्रतिवादी के गवाहों की गवाही की सत्यता को चुनौती देने में सक्षम नहीं रहा है।

28. दूसरी ओर, अपीलकर्ता के सभी गवाह रुचि रखने वाले गवाह हैं। हर समय ऐसा नहीं होता है कि रुचि रखने वाले गवाहों पर भरोसा नहीं किया जा सकता है, लेकिन वर्तमान मामले में उनके साक्ष्यों पर कुछ सावधानी के साथ विचार किया जाना

चाहिए क्योंकि वे अपीलकर्ता के भाई, मां और पत्नी होने के कारण अत्यधिक पक्षपाती गवाह हैं। उनका इनकार एक समान है और आगे अपीलकर्ता ने यह दिखाने की कोशिश की है कि 09.11.2003 की रात को अपीलकर्ता का भागलपुर में उपस्थित होना संभव नहीं था। इसका कारण यह है कि उस तारीख को पटना से भागलपुर के लिए दादर एक्सप्रेस ट्रेन नहीं चल रही थी, लेकिन इस तर्क पर परिवार न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश द्वारा विचार किया गया, जिन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि ट्रेन विभिन्न मार्गों से चलती थी और हर दिन नौगछिया या भागलपुर में उपलब्ध थी। यदि ट्रेन नौगछिया में उपलब्ध थी, तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, यह भागलपुर स्टेशन नहीं आ रही थी क्योंकि ये दो स्थान आसन्न स्थान हैं। इसी कारण से, अपीलकर्ता का दावा कि वह भागलपुर में उपस्थित नहीं था क्योंकि वह शाम 5:00 बजे तक पटना में था, विश्वसनीय नहीं है क्योंकि अपीलकर्ता की जिरह में ओपीडब्लू-5 के रूप में दर्ज किया गया है कि अतिथि गृह जहां अपीलकर्ता ठहरे थे, स्टेशन और अतिथि गृह के बीच में था और स्टेशन और परीक्षा केंद्र की दूरी केवल 3-4 किलोमीटर बताई गई है। इसलिए, अपीलकर्ता के लिए ट्रेन पकड़ने और विवाह संपन्न होने के समय तक भागलपुर पहुंचने में कोई बाधा नहीं थी। प्रतिवादी की ओर से प्रस्तुत दस्तावेजी साक्ष्यों को अपीलकर्ता ने चुनौती दी, इसे धोखाधड़ी और जाली दस्तावेज बताया। लेकिन, अतिथि गृह के रजिस्टर जो एलआईसी जैसी संस्था के मेहमानों के आगमन और प्रस्थान को दिखाते हैं, को प्रतिवादी की स्थिति में किसी व्यक्ति द्वारा जाली नहीं बनाया जा सकता। इसके बाद, कुछ दस्तावेज, जिन्हें पहचान के लिए चिह्नित किया गया था जैसे कि तस्वीरें आदि, जो पक्षों की अंतरंगता को दिखाती हैं, को आसानी से मोर्फ नहीं किया जा सकता। साथ ही,

यह भी विचार किया जाना चाहिए कि आजकल मोबाइल फोन और डिजिटल कैमरे ज्यादातर तस्वीरें लेने के लिए उपयोग किए जाते हैं और यदि एक प्रिंटआउट लिया जाता है, तो डिजिटल साक्ष्य को साबित करने के लिए किसी से पूछना एक कठिन कार्य होगा। यदि ऐसी तस्वीरें उपलब्ध हैं, तो उनके विचार के लिए कम से कम एक निष्पक्ष दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। अपीलकर्ता द्वारा उठाया गया एक और बिंदु, जहां तक 2004 के स्थान पर 2002 के वर्ष की हेरफेर का सवाल है, यह तथ्य परिवार न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश के ध्यान में नहीं लाया गया और इसे किसी उच्च न्यायालय के समक्ष चुनौती नहीं दी गई। यदि उक्त तथ्य प्रधान न्यायाधीश के ध्यान में नहीं लाया गया, तो इस मुद्दे को इस समय के बाद के हिस्से में नहीं उठाया जा सकता।

29. माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने इलावरासन बनाम पुलिस अधीक्षक और अन्य, 2023 एससीसी ऑनलाइन एससी 1120 के मामले में पैरा-8 में देखा है, जो इस प्रकार है:

"8. मद्रास उच्च न्यायालय द्वारा एस. बालकृष्णन पांडियन (उपरोक्त) में व्यक्त दृष्टिकोण, इस न्यायालय की राय में, गलत है। यह इस धारणा पर आधारित है कि हर विवाह को सार्वजनिक रूप से संपन्न या घोषित करने की आवश्यकता होती है। इस न्यायालय की राय में, ऐसा दृष्टिकोण सरल है क्योंकि अक्सर माता-पिता या रिश्तेदारी समूहों, या जाति/समुदाय संस्थानों के दबाव के कारण, विवाह में प्रवेश करने का इरादा रखने वाले जोड़े, ऐसे

विरोध के कारण सार्वजनिक घोषणा नहीं कर सकते। ऐसा करने से उनके जीवन को खतरा हो सकता है या कम से कम उनके शारीरिक अखंडता के लिए खतरा हो सकता है या सबसे खराब स्थिति में, एक दूसरे से जबरन या मजबूर अलगाव हो सकता है। यह कल्पना करना कठिन नहीं है कि अन्य दबाव दो व्यक्तियों पर डाले जा सकते हैं, जो अन्यथा वयस्क हैं और अपनी स्वतंत्र इच्छा का प्रयोग कर चुके हैं। सार्वजनिक घोषणा की शर्त को अधिरोपित करना, जो धारा 7 ए में अनुपस्थित है, इस न्यायालय की राय में, न केवल विधेयक के व्यापक आयात को संकीर्ण कर रहा है बल्कि यह भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत अधिकारों का उल्लंघन भी होगा। इस न्यायालय ने एक से अधिक निर्णयों में (लता सिंह बनाम उत्तर प्रदेश राज्य, (2006) 5 एससीसी 475, शफीन जहां बनाम असोकन केएम, (2018) 16 एससीसी 368, और लक्ष्मीबाई चंदरगी बी. बनाम कर्नाटक राज्य, (2021) 3 एससीसी 360) व्यक्तियों के स्वतंत्र विकल्प का अधिकार और यह जीवन के अधिकार का एक आंतरिक हिस्सा है। इसलिए, यह माना जाता है कि एस. बालकृष्णन पांडियन

(उपरोक्त) में व्यक्त दृष्टिकोण गलत है। इसे नागलिंगम

(उपरोक्त) में तदनुसार खारिज कर दिया गया है।"

हालांकि तथ्य समान नहीं हैं, लेकिन विवाह की खुली घोषणा के रास्ते में आने वाले खींचतान और दबाव और विभिन्न प्रकार की मजबूरियों का मुद्दा हमेशा ऐसे मामले में विचार करने का एक कारक होता है।

30. कुछ हद तक समान स्थिति में, माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने रंगनाथ परमेश्वर पंडितराव माली और अन्य बनाम एकनाथ गजानन कुलकर्णी और अन्य, (1996) 7 एससीसी 681 के मामले में माना है कि यदि संबंध का लगातार साक्ष्य है, तो एक कानूनी अनुमान उत्पन्न होता है कि वे पति-पत्नी के रूप में एक साथ रह रहे थे। इसी तरह का प्रभाव माननीय सर्वोच्च न्यायालय का शिरामाबाई पत्नी पुंडलिक भावे और अन्य बनाम कसान, रिकॉर्ड अधिकारी फॉर ओ.आई.सी. रिकॉर्ड्स, सेना कोर अभिलेख, गया, बिहार राज्य और अन्य, 2023 एससीसी ऑनलाइन एससी 1026 के मामले में पैरा संख्या 14 से 23 में देखा गया है, जो इस प्रकार है:

"14. यह अब कोई विवाद का विषय नहीं है कि यदि एक पुरुष और महिला लंबे समय तक पति-पत्नी के रूप में सहवास करते हैं, तो उनके पक्ष में यह अनुमान लगाया जा सकता है कि वे एक वैध विवाह के परिणामस्वरूप एक साथ रह रहे थे। यह अनुमान साक्ष्य अधिनियम की धारा 114 के तहत लगाया जा सकता है, जो इस प्रकार है:

"114. न्यायालय किसी भी तथ्य के अस्तित्व का अनुमान लगा सकता है जिसे वह सोचता है कि होने की संभावना है, प्राकृतिक घटनाओं, मानव आचरण और सार्वजनिक और निजी व्यवसाय के सामान्य पाठ्यक्रम को देखते हुए, विशेष मामले के तथ्यों के संबंध में।"

"15. इस संदर्भ में, हम अंड्राहेन्नेडिगे डिनोहामी बनाम विजेतुंगे लियानापटाबेंडिगे बालाहामी का उल्लेख कर सकते हैं, जहां प्रिवी काउंसिल ने इस प्रकार देखा:

"..... जहां एक पुरुष और महिला को पति और पत्नी के रूप में एक साथ रहने के लिए साबित किया गया है, कानून यह अनुमान लगाएगा, जब तक कि विपरीत स्पष्ट रूप से साबित न हो, कि वे एक वैध विवाह के परिणामस्वरूप एक साथ रह रहे थे और एक रखैल के रूप में नहीं।

XXX

XXX

XXX

"पक्ष बीस वर्षों तक एक ही घर में एक साथ रहे, और उनके आठ बच्चे पैदा हुए। पति ने अपने जीवन के दौरान अपनी पत्नी और बच्चों को स्नेही प्रावधानों द्वारा मान्यता दी। जिला रजिस्ट्रार के साक्ष्य से पता चलता है

कि कई वर्षों तक पक्षों को विवाहित नागरिकों के रूप में मान्यता दी गई थी, और यहां तक कि पारिवारिक कार्य और समारोह, जैसे कि विशेष रूप से, संबंधों और अन्य मेहमानों का स्वागत परिवार के घर में डॉन एंड्रिस और बालाहामी द्वारा मेजबान और मेजबान के रूप में - सभी ऐसे कार्य केवल इस आधार पर किए गए थे कि वे पति और पत्नी थे। इस संबंध को पति या पत्नी या किसी भी व्यक्ति द्वारा अस्वीकार करने का कोई साक्ष्य नहीं है।"

16. मोहब्बत अली खान बनाम मुहम्मद इब्राहिम खान में, प्रिवी काउंसिल द्वारा फिर से देखा गया था कि:

".... कानून विवाह के पक्ष में और रखैल के खिलाफ अनुमान लगाता है जब एक पुरुष और महिला कई वर्षों तक लगातार सहवास करते हैं"

17. इसी तरह, बद्री प्रसाद बनाम उप. समेकन निदेशक में, इस न्यायालय ने इस प्रकार माना:

"..... एक मजबूत अनुमान विवाह के पक्ष में उत्पन्न होता है जहां साझेदार लंबे समय तक पति और पत्नी के रूप में एक साथ रहते हैं। हालांकि अनुमान प्रतिवर्ती है, एक भारी बोझ उस पर है जो संबंध को कानूनी उत्पत्ति से

वंचित करना चाहता है। कानून वैधता के पक्ष में झुकता है और नाजायजता पर नाराज होता है"

18. एस.पी.एस. बालासुब्रमण्यम बनाम सुरुत्तायन उर्फ अंडाली पडैयाची में, इस न्यायालय ने इस प्रकार माना:

"4. इस न्यायालय द्वारा यह तय किया गया है कि यदि एक पुरुष और महिला लंबे समय तक पति और पत्नी के रूप में एक साथ रहते हैं, तो कानून में उनके बीच विवाह की वैधता का अनुमान उत्पन्न होता है। लेकिन अनुमान प्रतिवर्ती है (देखें गोकल चंद बनाम परवीन कुमारी)।"

19. यह सच है कि यदि साझेदार लंबे समय तक पति और पत्नी के रूप में एक साथ रहते हैं, तो विवाह के पक्ष में एक अनुमान होगा, लेकिन, उक्त अनुमान प्रतिवर्ती है, हालांकि भारी बोझ उस पर है जो संबंध को उसकी कानूनी उत्पत्ति से वंचित करना चाहता है यह साबित करने के लिए कि कोई विवाह नहीं हुआ था (देखें: तुलसा बनाम दुर्गतिया)।

20. इस न्यायालय ने मदन मोहन सिंह बनाम रजनी कांत, इंद्रा शर्मा बनाम वी.के.वी. शर्मा (उपरोक्त) और धन्नुलाल बनाम गणेशराम में इसी तरह का दृष्टिकोण लिया है।

21. गोकल चंद बनाम परवीन कुमारी उर्फ उषा रानी (उपरोक्त) के मामले में इस न्यायालय ने इस प्रकार देखा:

"..... एक पुरुष और महिला का पति और पत्नी के रूप में निरंतर सहवास और कई वर्षों तक उनके साथ इस तरह का व्यवहार विवाह का अनुमान उत्पन्न कर सकता है, लेकिन लंबे सहवास से उत्पन्न होने वाला अनुमान प्रतिवर्ती है और यदि ऐसी परिस्थितियां हैं जो उस अनुमान को कमजोर और नष्ट करती हैं, तो न्यायालय उन्हें नजरअंदाज नहीं कर सकता।"

22. कट्टुकंडी एदाथिल वालसन के मामले (उपरोक्त) में, उपरोक्त निर्णयों का हवाला देते हुए और साक्ष्य अधिनियम की धारा 114 पर भरोसा करते हुए, इस न्यायालय ने उक्त मामले के तथ्यों में माना कि वादियों के माता-पिता के बीच लंबे सहवास की स्थिति के आधार पर विवाह का अनुमान था, जिससे उनके संतानों को वाद सूची संपत्ति में अपने हिस्से का दावा करने का अधिकार मिला।

23. उपरोक्त निर्णयों की श्रृंखला से यह स्पष्ट होता है कि कानून एक पुरुष और महिला के लंबे समय तक लगातार सहवास करने पर विवाह के पक्ष में एक अनुमान लगाता है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि उक्त अनुमान प्रतिवर्ती है और इसे अचूक साक्ष्य के

नेतृत्व में प्रतिवर्तित किया जा सकता है। जब कोई ऐसी परिस्थिति होती है जो ऐसे अनुमान को कमजोर करती है, तो न्यायालयों को इसे नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। जो पक्ष सहवास पर सवाल उठाना चाहता है और संबंध को कानूनी पवित्रता से वंचित करना चाहता है, उस पर भारी बोझ होता है।"

31. प्रतिवादी की ओर से परीक्षण किए गए गवाहों ने स्पष्ट रूप से कहा है कि हिंदू विवाह के सभी रीति-रिवाज और अनुष्ठान संपन्न किए गए; सिंदूर लगाया गया और 'सप्तपदी' भी हुई। इस प्रकार, यह नहीं कहा जा सकता कि विवाह को एच एम ए की धारा 7 के तहत निर्धारित रीति-रिवाजों और अनुष्ठानों के प्रदर्शन में आवश्यकताओं से रहित किया गया था और स्पष्ट रूप से एच एम ए की धारा 5 के तहत प्रतिबंधित नहीं था।

32. उपरोक्त चर्चा के प्रकाश में, हमें यह मानने में कोई संकोच नहीं है कि प्रतिवादी अपीलकर्ता की कानूनी रूप से विवाहित पत्नी है और उनका विवाह 09 नवंबर, 2003 को संपन्न हुआ था। बिंदु संख्या (I) तदनुसार निर्णय लिया गया है।

बिंदु संख्या (II):

33. जहां तक निर्धारण के लिए दूसरे बिंदु का सवाल है, यह मुद्दा अपीलकर्ता और प्रतिवादी के पति-पत्नी के रूप में वैवाहिक स्थिति पर विवाद के कारण संतुलन में लटका हुआ था। एक बार जब प्रतिवादी यह साबित करने में सक्षम हो गई कि अपीलकर्ता उसका पति है, तो अपीलकर्ता की मौखिक गवाही से परित्याग साबित

होता है, जिसे पहले ही विस्तार से चर्चा की जा चुकी है। यदि अपीलकर्ता ने प्रतिवादी को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करने से इनकार कर दिया है, तो स्वाभाविक रूप से, वैवाहिक जीवन की पुनर्स्थापना का कोई सवाल ही नहीं था और अपीलकर्ता का पूरा विरोध केवल इस बिंदु पर है कि प्रतिवादी उसकी पत्नी नहीं है क्योंकि उनका विवाह एच एम ए की धारा 5 और 7 के प्रावधानों के तहत साबित नहीं हो सका और इसलिए, वह प्रतिवादी के साथ किसी भी वैवाहिक संबंध को पुनर्स्थापित करने के लिए उत्तरदायी नहीं था। एच एम ए की धारा 9 इस प्रकार पढ़ी जाती है:-

"9. वैवाहिक अधिकारों की पुनर्स्थापना।— जब पति या पत्नी में से किसी ने बिना उचित कारण के दूसरे के समाज से हट गया हो, तो पीड़ित पक्ष जिला न्यायालय में याचिका द्वारा वैवाहिक अधिकारों की पुनर्स्थापना के लिए आवेदन कर सकता है और न्यायालय, ऐसी याचिका में किए गए बयानों की सत्यता से संतुष्ट होने पर और यह कि आवेदन को अस्वीकार करने का कोई कानूनी आधार नहीं है, तदनुसार वैवाहिक अधिकारों की पुनर्स्थापना का डिक्री पारित कर सकता है।

[व्याख्या।— जहां यह प्रश्न उठता है कि समाज से हटने के लिए उचित कारण था या नहीं, तो उचित कारण साबित करने का भार उस व्यक्ति पर होगा जिसने समाज से हटने का कार्य किया है।]"

34. स्पष्ट रूप से, अपीलकर्ता ने बिना किसी उचित कारण के प्रतिवादी को छोड़ दिया है और दोनों पक्षों के साक्ष्यों की चर्चा के प्रकाश में, हम पाते हैं और मानते हैं कि प्रतिवादी वैवाहिक अधिकारों की पुनर्स्थापना के लिए राहत पाने की हकदार है। इस प्रकार, बिंदु संख्या (II) भी तदनुसार निर्णय लिया गया है।

35. यहां ऊपर की गई चर्चा के प्रकाश में, हमें भागलपुर के परिवार न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश के निर्णय में कोई खामी नहीं मिलती है और इसे यहां पुष्टि की जाती है।

36. तदनुसार, वर्तमान विविध अपील खारिज की जाती है।

37. अपीलकर्ता को निर्देश दिया जाता है कि वह प्रतिवादी को मुकदमे की लागत का भुगतान करे, जिसे निर्णय की तारीख से छह महीने के भीतर 1,00,000/- (एक लाख) रुपये के रूप में निर्धारित किया गया है, जबकि अपनी लागत स्वयं वहन करे।

38. कार्यालय को तदनुसार डिक्री तैयार करने का निर्देश दिया जाता है।

39. लंबित आवेदन, यदि कोई हो, का निपटारा किया जाता है।

(माननीय न्यायमूर्ति श्री पी. बी. भजंत्री)

(माननीय न्यायमूर्ति श्री अरुण कुमार झा)

आशीष /-

खंडन (डिस्क्लेमर)- स्थानीय भाषा में निर्णय के अनुवाद का आशय, पक्षकारों को इसे अपनी भाषा में समझने के उपयोग तक ही सीमित है और अन्य प्रयोजनार्थ इसका उपयोग नहीं किया जा सकता । समस्त व्यवहारिक, कार्यालयी, न्यायिक एवं सरकारी प्रयोजनार्थ, निर्णय का अंग्रेजी संस्करण ही प्रमाणिक होगा साथ ही निष्पादन तथा कार्यान्वयन के प्रयोजनार्थ अनुमान्य होगा।